हरिभूमि
# सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

11 डॉ. श्यामा मुखर्जी के विचार आज भी राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा : बराला

12 कुम्हारिया में पेयजल संकट गहराया ग्रामीणों ने रोष जताया

### डायल-112 ने छात्रा को समय पर पहुंचाकर बचाया साल, भाजपा के पूर्व विधायक से लेकर चेयरमैन तक परीक्षा केंद्रों पर डटे

*पुख्ता व्यवस्थाओं के चलते अनुशासन और पारदर्शिता बनी रही*

# कड़ी सुरक्षा के बीच हुई एचटेट लेवल-3 परीक्षा

## 2458 अभ्यर्थी पहुंचे, 10.75 प्रतिशत रहे गैरहाजिर

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा (एचटेट)-2025 के तहत शनिवार को जिले में लेवल-3 (पीजीटी) की परीक्षा शांतिपूर्ण, पारदर्शी और नकल रहित वातावरण में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। जिला प्रशासन की कड़ी निगरानी और व्यापक सुरक्षा प्रबंधों के बीच जिले के 9 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित इस परीक्षा में 2754 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिनमें से 2458 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी, जबकि 296 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद नजर आया। उपायुक्त डॉ. विवेक भारती, पुलिस अधीक्षक, अतिरिक्त उपायुक्त तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारियों ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

**उपायुक्त और एसपी सहित वरिष्ठ अधिकारियों ने लिया व्यवस्थाओं का जायजा**

**फतेहाबाद।** एचटेट को लेकर सीटिंग प्लान में अपनी जगह देखते युवती, एचटेट परीक्षा केन्द्र के बाहर तैनात भाजपा नेता व एचटेट परीक्षा केन्द्र के बाहर तैनात पुलिस कर्मचारी। *फोटो: हरिभूमि*

#### हर केंद्र पर जैमर और सीसीटीवी से निगरानी

एचटेट परीक्षा को पूरी तरह नकलमुक्त एवं पारदर्शी बनाने के लिए सभी परीक्षा केंद्रों पर व्यापक सुरक्षा इंतजाम किए गए थे। प्रत्येक केंद्र पर सीसीटीवी कैमरों और जैमर की व्यवस्था रही। अभ्यर्थियों को केंद्र में प्रवेश से पहले गहन जांच और बायोमीट्रिक सत्यापन की प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। निर्धारित मानकों के अनुसार ही परीक्षार्थियों को प्रवेश दिया गया। परीक्षा केन्द्रों के बाहर दोपहर से ही अभ्यार्थियों का जुटना शुरू हो गया था। अभ्यार्थी सीटिंग प्लान में अपना नंबर चैक करते नजर आए।

#### हर सेंटर पर डटे भाजपा कार्यकर्ता

एचटेट को लेकर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा ने स्वयं अपनी टीम के साथ कई परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया तथा संबंधित अधिकारियों को हर जरूरी व्यवस्था पूरी करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि बाहर से आने वाले परीक्षार्थियों को कोई भी परेशानी नहीं आने दी जाएगी। परीक्षार्थियों की मदद के लिए भाजपा के कार्यकर्ताओं ने मोर्चा संभाल लिया है। सभी परीक्षा केन्द्रों के बाहर कार्यकर्ताओं ने हेल्प डेस्क स्थापित किये हैं, जहां परीक्षार्थियों की शंकाओं और समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। कार्यकर्ताओं द्वारा बहुत से परीक्षार्थियों को उनके सही परीक्षा केन्द्र पर भी पहुंचाया जा रहा है।

#### गहन जांच और बायोमीट्रिक सत्यापन की प्रक्रिया से गुजरने के बाद मिला प्रवेश

#### जानें किस केंद्र पर कितनी रही उपस्थिति

| क्रम | परीक्षा केंद्र का नाम | कुल विद्यार्थी | उपस्थित | अनुपस्थित |
|---|---|---|---|---|
| 1 | राजकीय महिला महाविद्यालय, भोडिया खेड़ा (ब्लॉक-1) | 320 | 288 | 32 |
| 2 | राजकीय महिला महाविद्यालय, भोडिया खेड़ा (ब्लॉक-2) | 320 | 291 | 29 |
| 3 | क्रेसेंट पब्लिक स्कूल, खैराती खेड़ा रोड (ब्लॉक-1) | 320 | 286 | 34 |
| 4 | क्रेसेंट पब्लिक स्कूल, खैराती खेड़ा रोड (ब्लॉक-2) | 300 | 258 | 42 |
| 5 | राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय (ब्लॉक-1) | 300 | 262 | 38 |
| 6 | राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय (ब्लॉक-2) | 300 | 266 | 34 |
| 7 | एमएम पीजी कॉलेज, रतिया रोड (ब्लॉक-1) | 300 | 272 | 28 |
| 8 | एमएम पीजी कॉलेज, रतिया रोड (ब्लॉक-2) | 300 | 268 | 32 |
| 9 | एसबीपी डीएवी सेंटेनरी स्कूल, (ब्लॉक-1) | 294 | 267 | 27 |
| कुल | | 2754 | 2458 | 296 |

#### आज रहेगा यह परीक्षा कार्यक्रम

रविवार को एचटेट की दो परीक्षाएं आयोजित होंगी। लेवल-2 (टीजीटी) की परीक्षा प्रातः 10 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक तथा लेवल-1 (पीआरटी) की परीक्षा दोपहर 30 बजे से शाम 5:30 बजे तक होगी। उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने सभी अभ्यर्थियों से अपील की है कि वे परीक्षा केंद्र पर निर्धारित समय से पहले पहुंचें, ताकि सुरक्षा जांच, बायोमीट्रिक सत्यापन एवं अन्य औपचारिकताएं समय पर पूरी हो सकें।

#### जिले में बनाए गए हैं 15 परीक्षा केंद्र

एचटेट परीक्षा के लिए फतेहाबाद जिले में कुल 15 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। इनमें लेवल-3 (पीजीटी) के लिए 9 केंद्रों पर परीक्षा आयोजित की गई, जबकि रविवार को लेवल-2 (टीजीटी) के लिए 15 केंद्रों पर 4535 अभ्यर्थी तथा लेवल-1 (पीआरटी) के लिए 5 केंद्रों पर 1391 अभ्यर्थी परीक्षा देंगे। जिले में जिन संस्थानों को परीक्षा केंद्र बनाया गया है, उनमें चौधरी मनीराम गोदारा राजकीय महिला महाविद्यालय भोडिया खेड़ा (ब्लॉक-1 एवं 2), क्रेसेंट पब्लिक स्कूल खैराती खेड़ा रोड (ब्लॉक-1 एवं 2), राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल भवन के निकट) आदि शामिल है।

#### जिलाध्यक्ष ने भाजपा के धुरंधरों को परीक्षा केंद्रों तक किया सीमित

एचटेट परीक्षा को लेकर भाजपा के वरिष्ठ नेताओं को परीक्षा केन्द्रों का संयोजक बनाया गया है। भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने भाजपा के धुरंधरों को परीक्षा केन्द्रों तक ही सीमित कर दिया। भोडियाखेड़ा महिला महाविद्यालय में संयोजक राजपाल बैनीवाल के साथ जसवंत माचरा, भारती सचदेवा, संजय इन्दौरा व सोनू चालिया अपनी सेवाएं दी। क्रेसंट स्कूल में पूर्व विधायक दुड़ाराम के साथ जगदीश शर्मा, विजय जांगड़ा, नीलम मैहता व सीताराम बिश्नोई डटे रहे। सीनियर सेकेंडरी स्कूल ठाकर बस्ती में भारत भूषण मिड्ढा के साथ मनदीप योगी, सुगम वाल्मीकि, नरेन्द्र बागड़ी व दुर्गेश अरोड़ा ने सेवाएं दी। इसी प्रकार एमएम कॉलेज में सुमन खिचड़ के साथ सुभाष खिचड़, डॉ. सुमन बजाज, विकास शर्मा व सुरेन्द्र बिश्नोई, डीएवी स्कूल में बलदेव ग्रोहा के साथ संदीप भोड़िया तृप्ता शर्मा, अमृतपाल खुम्बर, बिट्टू गुर्जर, अपेक्स स्कूल में अशोक जीखड़ के साथ धनंजय अग्रवाल, पूनम सिंगला, सन्नी बंसल और अमित सहारण, डीएवी पुलिस स्कूल में इन्द्र गावड़ी के साथ निलांशी शर्मा, विक्रम मराठी, आर्यन ग्रोवर व रवि शर्मा, स्प्रिंग बैल स्कूल में लक्ष्मण नापा के साथ डॉ. रणजीत ओड, राधेश्याम झाझड़ा आदि ने हेल्प डेस्क संभाला।

### हेरोइन सहित एक युवक को किया काबू

**फतेहाबाद।** नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए थाना शहर टोहाना पुलिस ने एक युवक को 7 ग्राम हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया है। पकड़े गए युवक की पहचान टोहाना के रामनगर स्थित रविदास मोहल्ला निवासी संजय उर्फ बच्ची पुत्र गुरदेव सिंह के रूप में हुई है। थाना शहर टोहाना प्रभारी निरीक्षक कुलदीप सिंह ने बताया कि पुलिस टीम गश्त एवं अपराध रोकथाम के दौरान नए बाईपास स्थित नहर पुल के पास मौजूद थी। इसी दौरान एक युवक मोटरसाइकिल पर आता दिखाई दिया, जिसने पुलिस वाहन को देखकर वापस मुड़कर भागने का प्रयास किया। संदेह के आधार पर पुलिस ने उसे काबू कर लिया।

## अवैध हथियारों का मुख्य सप्लायर गिरफ्त में

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

जिला पुलिस की सीआईए टीम ने अवैध हथियार तस्करी के नेटवर्क का भंडाफोड़ करते हुए मुख्य सप्लायर को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान हिसार के गांव नंगथला निवासी सोनी उर्फ छब्बा पुत्र बलवंत सिंह के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। इस मामले में पुलिस पहले ही दो अन्य आरोपियों को दबोच चुकी है। सीआईए फतेहाबाद के प्रभारी निरीक्षक संदीप सिंह ने बताया कि कुछ समय पहले पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर भट्टू कलां क्षेत्र में शिवा आश्रम के पास स्थित एक खेत ढाणी से राकेश उर्फ राका निवासी भट्टू कलां) को गिरफ्तार किया था। तलाशी के दौरान राकेश के कब्जे से 21 किलो 130 ग्राम गांजा, एक 32 बोर की अवैध पिस्तौल और दो जिंदा कारतूस बरामद हुए थे।

**फतेहाबाद।** पुलिस गिरफ्त में अवैध हथियारों का सप्लायर। *फोटो: हरिभूमि*

#### कार्रवाई रहेगी जारी

प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि पुलिस टीम ने तकनीकी विश्लेषण और खुफिया तंत्र की मदद से जाल बिछाकर मुख्य हथियार सप्लायर सोनी उर्फ छब्बा को काबू किया। पुलिस अब इस बात की गहनता से जांच कर रही है कि आरोपी सोनी यह हथियार कहां से लाता था और उसने इलाके में किन-किन लोगों को अवैध हथियारों की सप्लाई की है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही इस सप्लाई चेन से जुड़े कुछ और चेहरों को बेनकाब किया जाएगा।

पूछताछ के दौरान आरोपी राकेश ने खुलासा किया था कि बरामद की गई अवैध पिस्तौल उसे हिसार के सोनी उर्फ छब्बा ने सप्लाई की थी।

## भट्टू में न्यू दुर्गा गारमेंट्स में देर रात लगी आग

- हिसार रोड पर शॉर्ट सर्किट के कारण हुआ बड़ा हादसा

हरिभूमि न्यूज ⏭भट्टूकलां

कस्बे के हिसार रोड स्थित एक प्रसिद्ध गारमेंट्स शॉप में शुक्रवार की देर रात उस वक्त हडक़ंप मच गया, जब अचानक भीषण आग लग गई। देखते ही देखते आग की विकराल लपटों ने पूरी दुकान को अपनी आगोश में ले लिया। इस दर्दनाक हादसे में दुकान के अंदर रखा भारी मात्रा में तैयार गारमेंट्स का कीमती सामान, आधुनिक फर्नीचर और अन्य महत्वपूर्ण सामग्री जलकर पूरी तरह राख हो गई। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि उन्होंने दुकान के ठीक ऊपर बने गोदाम को भी अपनी चपेट में ले लिया। गोदाम में आगामी सीजन के लिए रखा कपड़ों का भारी स्टॉक भी इस आग की भेंट चढ़ गया। प्रारंभिक अनुमान के अनुसार, इस अग्निकांड से पीड़ित दुकानदार को लाखों रुपए का भारी-भरकम आर्थिक नुकसान हुआ है। शनिवार सुबह तक जले सामान से धुंआ निकलता रहा। मिली जानकारी के अनुसार, हिसार रोड पर स्थित न्यू दुर्गा गारमेंट्स एवं जनरल स्टोर में देर रात करीब 11 बजे के बाद अचानक से धुआं और आग की लपटें उठती हुई दिखाई दीं। राहगीरों और आसपास के लोगों ने जब दुकान से आग की ऊंची लपटें उठती देखीं, तो तुरंत इसकी सूचना दुकान मालिक और फायर ब्रिगेड को दी। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की गाडिय़ाँ सायरन बजाती हुई मौके पर पहुंचीं। दमकल कर्मियों ने मोर्चा संभालते हुए भारी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाना शुरू किया, लेकिन जब तक आग की तीव्रता को कम किया जाता, तब तक दुकान और गोदाम में रखा अधिकांश सामान जलकर राख हो चुका था।

आग से दुकान में जला सामान।

#### दमकल विभाग ने पाया काबू

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि आग इतनी भयानक थी कि इसकी गगनचुंबी लपटें दूर-दूर से ही साफ नजर आ रही थीं। खतरे को भांपते हुए आसपास के स्थानीय दुकानदारों और नागरिकों ने भी अपनी जान की परवाह न करते हुए दमकल कर्मियों का पूरा सहयोग किया। स्थानीय लोगों की मुस्तैदी और दमकल विभाग की त्वरित कार्रवाई के चलते आग को पड़ोस की अन्य दुकानों में फैलने से रोक लिया गया, वरना पूरा बाजार इसकी चपेट में आ सकता था। हालांकि, आग की तपिश इतनी ज्यादा थी कि अंदरूनी हिस्सों में सुबह तक आग रुक-रुक कर धधकती रही। प्राथमिक जांच और परिस्थितियों को देखते हुए आशंका जताई जा रही है कि यह हादसा शॉर्ट सर्किट के कारण हुआ है।

## जमीन विवाद में हत्या का आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭रतिया

जमीन के खूनी विवाद में हुई एक व्यक्ति की निर्मम हत्या के मामले में जांच को तेज करते हुए थाना सदर रतिया पुलिस ने एक और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान बादल सिंह पुत्र बरयाम सिंह निवासी गांव हुक्मांवाली के रूप में हुई है। गौरतलब है कि इस हत्याकांड के मुख्य आरोपी को पुलिस पहले ही सलाखों के पीछे भेज चुकी है। थाना सदर रतिया के प्रभारी उपनिरीक्षक शीशपाल सिंह ने बताया कि इस खूनी संघर्ष को लेकर पंजाब के मानसा के गांव मियां निवासी अमृतपाल कौर पत्नी सुखदीप सिंह ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत के मुताबिक, परिवार में जमीन के बंटवारे को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था। घटना वाले दिन आरोपी पक्ष पूरी योजना के साथ घातक हथियारों से लैस होकर मौके पर पहुंच गया और आते ही झगड़ा शुरू कर दिया।

हत्या मामले में गिरफ्तार आरोपी।

#### *गुप्त सूचना पर कार्रवाई*

*थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित पक्ष की शिकायत और मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर थाना सदर रतिया में 23 जून को विभिन्न संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। इसी जांच के सिलसिले में गुप्त सूचना और साक्ष्यों के आधार पर आरोपी बादल सिंह को दबोचा गया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले में संलिप्त किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा और कानून के मुताबिक सख्त से सख्त कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।*

## चेक बाउंस मामलों की विशेष लोक अदालत 18 जुलाई को

- चेक बाउंस से जुड़े मामलों का किया जाएगा निपटारा

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

हरियाणा राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सदस्य सचिव से प्राप्त दिशा निर्देशों की अनुपालना में पूरे प्रदेश में चेक बाउंस मामलों की विशेष लोक अदालत का आयोजन 18 जुलाई को किया जाएगा। इस विशेष लोक अदालत में मुख्य रूप से चेक बाउंस से जुड़े मामलों का आपसी समझौते के आधार पर निपटारा किया जाएगा। यह जानकारी जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी डॉ. सुयशा जावा ने दी। विशेष लोक अदालत का आयोजन स्थानीय न्यायिक परिसर व उपमंडल स्तर पर रतिया व टोहाना न्यायिक परिसरों में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिन लोगों के चेक बाउंस धारा 138 एनआइ एक्ट से संबंधित मामले न्यायालय में लंबित है वे 17 जुलाई तक संबंधित अदालत में उपस्थित होकर अपने मामलों का विशेष लोक अदालत में विचारार्थ प्रस्तुत कर सकते हैं।

## नशा तस्करों पर बड़ी कार्रवाई, चार गिरफ्तार

- लाखों रुपये की हेरोइन और प्रतिबंधित नशीली गोलियां बरामद

हरिभूमि न्यूज ⏭डबवाली

पुलिस ने नशा तस्करों पर बड़ी कार्रवाई करते हुए जिले क्षेत्र से चार तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार तस्करों से करीब 18 लाख रुपये की हेरोइन व प्रतिबंधित नशीली गोलियां बरामद की गई हैं। डबवाली की पुलिस अधीक्षक शनिवार को बताया कि पुलिस टीम गश्त पड़ताल पर मौजूद थी। इसी दौरान एक कार आती दिखाई दी। कार चालक ने पुलिस को देखकर कार को तेज गति से भगाने का प्रयास किया। तलाशी लेने पर कार से लाखों रुपये की करीब 70 ग्राम हेरोइन बरामद हुई।

पकड़ा गया हेरोइन तस्कर।

#### पहले से तीन मामले दर्ज

सीआईए डबवाली ने गांव मटदादू एक व्यक्ति को हजारों प्रतिबंधित गोलियों सहित गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान जगमोहन सिंह के रूप में हुई है। आपराधिक रिकार्ड के अनुसार आरोपी जगमोहन सिंह पहले भी नशा तस्करी के मामलों में संलिप्त रहा है, और उसके खिलाफ तीन मामले दर्ज हैं। इसके अलावा पुलिस ने गांव केवल क्षेत्र से जगसीर सिंह को प्रतिबंधित नशीली गोलियों सहित गिरफ्तार किया है। बरामद गोलियों को ड्रग विभाग के हवाले कर दिया गया है। एसपी ने कहा कि पुलिस नशा तस्करों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर कार्य कर रही है।

## ओम नमः शिवाय का जाप 30 जुलाई से

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

पुलिस लाइन स्थित श्री राधा-कृष्ण मंदिर श्रावण मास के उपलक्ष्य में 30 जुलाई से 28 अगस्त तक प्रातः 6 बजे से सवा करोड़ ऊँ नमः शिवाय पाठ के महाजप का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया जाएगा। मंदिर के पुजारी कमल शर्मा ने बताया कि मंदिर में महादेव का ऊँ नमः शिवाय जप का आयोजन रूद्राक्ष की माला से आरंभ किया जाएगा एवं रुद्राभिषेक कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाएगा। पंडित कमल शर्मा ने देते हुए बताया कि सावन में की गई शिव साधना व्यक्ति को जीवन के कष्टों से मुक्ति दिलाने और नकारात्मक प्रभावों को दूर करने में सहायक होती है। उन्होंने बताया कि भगवान शिव के भक्तों के लिए सावन का महीना बहुत ही प्रिय है। इस महीने में भगवान शिव ने माता पार्वती को इस महीने में ही अपनी अर्धांगिनी के रुप में स्वीकार किया था।

**पुलिस लाइन स्थित श्री राधा-कृष्ण मंदिर में होगा कार्यक्रम**

### उपायुक्त के निर्देश पर नायब तहसीलदार के नेतृत्व में मार्केटिंग बोर्ड व पब्लिक हेल्थ विभाग ने किया संयुक्त निरीक्षण

## सालों पुरानी सीवरेज समस्या पर चला प्रशासन का एक्शन, संयुक्त टीम ने मौके पर कराया समाधान

हरिभूमि न्यूज ⏭भट्टूकलां

लंबे समय से चली आ रही सीवरेज समस्या के समाधान की दिशा में शनिवार को प्रशासन की पहल पर महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। उपायुक्त के निर्देशों पर नायब तहसीलदार हरीश कुमार के नेतृत्व में मार्केटिंग बोर्ड और पब्लिक हेल्थ विभाग की संयुक्त टीम मौके पर पहुंची और सीवरेज व्यवस्था का निरीक्षण कर समस्या का समाधान कराया। इस दौरान मार्केटिंग बोर्ड के एक्सईएन आनंद कुमार, एसडीओ गौरव वधवा, जेई बलविन्द्र, बंशीलाल भीगासरा, समाजसेवी आशु गोयल आदि मौजूद रहे।

**भट्टूकलां।** सीवरेज समस्या का समाधान होने पर अधिकारियों का आभार जताते हुए।

#### सौंपी जिम्मेदारी

मिली जानकारी के अनुसार, पहले इस सीवरेज व्यवस्था की जिम्मेदारी पब्लिक हेल्थ विभाग के पास थी, जिसे बाद में मार्केटिंग बोर्ड के हवाले कर दिया गया था। अब प्रशासनिक निर्णय के बाद इस व्यवस्था के संचालन और रखरखाव की जिम्मेदारी दोबारा पब्लिक हेल्थ विभाग को सौंप दी गई है। बंशीलाल ने जिला उपायुक्त व दोनों विभागों का आभार प्रकट किया है।

#### सीवरेज व्यवस्था सुचारु रखने के लिए उठाए जाएंगे कदम

मौके पर अधिकारियों ने भी भरोसा दिलाया कि सीवरेज व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम लगातार उठाए जाएंगे। उल्लेखनीय कि पिछले कई दिनों से सीवरेज की समस्या के कारण माचरा मंडी में कई गलियों में व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सीवरेज का गंदा पानी खड़ा होने के कारण बदबू मार रहा था और लोगों का जीना दूभर हो गया था। इसी को लेकर भट्टू मंडी के समाजसेवी आशु गोयल ने मुख्यमंत्री से भी चंडीगढ़ में मुलाकात की थी। मुलाकात करने के बाद उन्होंने जिला उपयुक्त को इस बारे में अवगत करवाया और तत्काल उपायुक्त ने नायब तहसीलदार को भेज कर दोनों विभागों को मौके पर बुलाकर इस समस्या का समाधान करवा दिया है।

#### स्थानीय लोगों ने ली राहत की सांस, दोनों विभागो का जताया आभार

■ 60 हजार बचाने के चक्कर में गंवा सकते हैं 82 लाख रुपये

■ कंपाउंडिंग बताता है कि निवेश में समय ही सबसे बड़ी पूंजी

■ जल्दी शुरुआत करने वालों को मिलता है सबसे बड़ा फायदा

# एसआईपी में सिर्फ 1 वर्ष की देरी पड़ सकती है भारी

**निवेश मंत्रा**
बिजनेस डेस्क

*म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि जितना अधिक पैसा निवेश करेंगे, उतना बड़ा फंड तैयार होगा। यह बात सही है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश की रकम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है निवेश की शुरुआत का समय। यदि कोई व्यक्ति एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक साल की भी देरी करता है तो उसे भविष्य में लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ सबसे अधिक काम करती है। यही वजह है कि एसआईपी की पहली किस्त की कीमत आखिरी किस्त से कई गुना ज्यादा होती है। एक साल की देरी केवल 12 किस्तों का नुकसान नहीं कराती, बल्कि उन किस्तों पर मिलने वाले वर्षों के रिटर्न से भी निवेशक वंचित रह जाता है।*

## क्यों सबसे अहम है पहली एसआई

कंपाउंडिंग का अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर रिटर्न कमाने लगता है। यानी आपका पैसा केवल बढ़ता नहीं, बल्कि बढ़ा हुआ पैसा भी कमाई करता है। यदि कोई निवेशक 30 वर्ष तक लगातार एसआईपी करता है, तो पहले साल जमा की गई रकम को पूरे 30 वर्षों तक बढ़ने का मौका मिलता है। वहीं अंतिम वर्ष में जमा की गई राशि को केवल कुछ महीनों का ही समय मिलता है। यही कारण है कि शुरुआती निवेश की ताकत सबसे अधिक होती है। विशेषज्ञ इसे निवेश की दुनिया का सबसे बड़ा जादू मानते हैं। जितनी जल्दी शुरुआत होगी, कंपाउंडिंग उतना ही अधिक काम करेगी।

## एक साल की देरी का बड़ा नुकसान

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है। यदि वह लगातार 30 वर्षों तक निवेश करता है तो कुल निवेश राशि 18 लाख रुपये होगी। इस अवधि के अंत में उसका फंड लगभग 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। लेकिन यदि वही निवेशक एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक वर्ष की देरी कर देता है और केवल 29 वर्ष निवेश करता है, तो उसका अंतिम फंड घटकर लगभग 1.56 करोड़ रुपये रह जाएगा। यानी केवल 60 हजार रुपये (12 किस्तें) का निवेश टालने की कीमत लगभग 20.43 लाख रुपये हो सकती है। यह उदाहरण बताता है कि निवेश में सबसे बड़ा नुकसान बाजार की गिरावट नहीं, बल्कि समय गंवाने से होता है।

## जितनी बड़ी एसआई, उतना नुकसान

एक साल की देरी का असर निवेश राशि बढ़ने के साथ और भी ज्यादा दिखाई देता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 2,000 रुपये की एसआईपी करता है तो एक साल की देरी से लगभग 8.17 लाख रुपये का संभावित नुकसान हो सकता है। 10,000 रुपये मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक के लिए यही नुकसान बढ़कर लगभग 40.87 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। वहीं यदि मासिक एसआईपी 20,000 रुपये की है तो केवल एक साल की देरी भविष्य में करीब 82 लाख रुपये के संभावित फंड को कम कर सकती है। यही कारण है कि निवेश विशेषज्ञ हमेशा कहते हैं कि ₹सही समय का इंतजार मत कीजिए, समय को अपने पक्ष में कीजिए।

## आखिर में रफ्तार पकड़ती है कंपाउंडिंग

एसआईपी का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार धीमी लगती है, लेकिन बाद के वर्षों में वही निवेश तेजी से बढ़ने लगता है।

उदाहरण के तौर पर 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी में

- 10 वर्ष बाद कुल निवेश लगभग 6 लाख रुपये होगा और फंड करीब 11.62 लाख रुपये बन सकता है।
- 20 वर्ष बाद कुल निवेश 12 लाख रुपये होगा, लेकिन फंड करीब 50 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।
- 30 वर्ष पूरे होने पर कुल निवेश 18 लाख रुपये रहेगा, जबकि फंड बढ़कर लगभग 1.76 करोड़ रुपये हो जाएगा।
- यानी अंतिम दस वर्षों में केवल 6 लाख रुपये का अतिरिक्त निवेश पूरे फंड को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंचा देता है। यही कंपाउंडिंग की असली ताकत है।

## शुरुआत में देरी हो गई तो क्या करें?

यदि किसी कारणवश एसआईपी शुरू करने में देरी हो गई है तो भी नुकसान की भरपाई की जा सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार यदि आपने पहला साल गंवा दिया है तो शेष अवधि में अपनी मासिक एसआईपी थोड़ी बढ़ाकर इस अंतर को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आपकी योजना 5,000 रुपये मासिक एसआईपी की थी और एक साल की देरी हो गई, तो अगले 29 वर्षों तक लगभग 5,655 रुपये प्रति माह निवेश करके उस संभावित अंतर को काफी हद तक भरा जा सकता है। यानी हर महीने केवल 655 रुपये अतिरिक्त निवेश भविष्य में लाखों रुपये का अंतर पैदा कर सकता है।

## छोटी एसआईपी भी बनेगी बड़ा फंड

- कई लोग सोचते हैं कि निवेश शुरू करने के लिए बड़ी रकम होना जरूरी है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।
- वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि यदि फिलहाल बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है तो 500 रुपये, 1,000 रुपये या 2,000 रुपये से भी एसआईपी शुरू की जा सकती है। जैसे-जैसे आय बढ़े, वैसे-वैसे एसआईपी की राशि भी बढ़ाई जा सकती है।
- नियमित निवेश और लंबी अवधि का अनुशासन ही बड़ा कोष तैयार करने की सबसे प्रभावी रणनीति है।

## समय ही सबसे बड़ा निवेश है

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश की दुनिया में सबसे मूल्यवान चीज पैसा नहीं, बल्कि समय है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन लंबे समय तक निवेश बनाए रखने वाले निवेशकों को कंपाउंडिंग का सबसे बड़ा लाभ मिलता है। यदि आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो निवेश की शुरुआत टालने के बजाय जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी एसआईपी शुरू करें। छोटी-सी शुरुआत भी समय के साथ करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकती है। इसलिए निवेश का सबसे अच्छा समय आज है, क्योंकि एक साल की देरी भविष्य में लाखों नहीं, बल्कि बड़े निवेशकों के लिए करोड़ों रुपये तक का अंतर पैदा कर सकती है।

## पीपीएफ या म्यूचुअल फंड पर लें लोन?

- इमरजेंसी में कौन सा विकल्प है बेहतर
- अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़े बिना मिल सकती रकम
- दोनों विकल्पों के फायदे, नुकसान और किसके लिए कौन बेहतर

बिजनेस डेस्क

अचानक मेडिकल इमरजेंसी, बिजनेस में नकदी की जरूरत या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए अक्सर लोग अपने निवेश तोड़ देते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेश को समय से पहले भुनाने के बजाय उसके बदले लोन लेना कई बार अधिक फायदेमंद साबित होता है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और म्यूचुअल फंड, दोनों पर लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन दोनों की शर्तें, ब्याज दरें और लोन की सीमा अलग-अलग हैं। ऐसे में जरूरत और निवेश के आधार पर सही विकल्प चुनना जरूरी है।

**पीपीएफ पर लोनः कम ब्याज, लेकिन सीमित सुविधा**

पीपीएफ पर लोन केवल एक निश्चित अवधि के दौरान ही लिया जा सकता है। खाता खुलने वाले वित्तीय वर्ष के तीसरे साल से लेकर छठे वित्तीय वर्ष तक ही यह सुविधा मिलती है। यदि पहले लिया गया लोन पूरी तरह चुका दिया गया हो, तभी अगला लोन लिया जा सकता है। लोन की अधिकतम राशि आवेदन से दो वित्तीय वर्ष पहले के खाते में उपलब्ध बैलेंस के केवल 25 प्रतिशत तक सीमित होती है। चूंकि पीपीएफ सरकार समर्थित बचत योजना है, इसलिए इस पर ब्याज भी कम लगता है। वर्तमान में पीपीएफ पर 7.1 प्रतिशत ब्याज मिलता है और लोन की ब्याज दर इससे केवल 1 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 8.1 प्रतिशत है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये का लोन चाहिए तो उसके पीपीएफ खाते में लगभग 16 लाख रुपये का बैलेंस होना आवश्यक होगा, क्योंकि केवल 25 प्रतिशत राशि ही लोन के रूप में मिल सकती है।

**म्यूचुअल फंड पर लोन : ज्यादा रकम और अधिक लचीलापन**

म्यूचुअल फंड के बदले लोन निवेशकों के लिए अधिक लचीला विकल्प माना जाता है। यह सुविधा फिजिकल और डीमैट दोनों रूपों में रखी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर उपलब्ध है। इसका लाभ व्यक्तिगत निवेशकों के अलावा एचयूएफ, कंपनियां, एलएलपी, ट्रस्ट और साझेदारी फर्में भी ले सकती हैं। इक्विटी, डेट, हाइब्रिड और लिक्विड फंड सभी पर लोन मिल सकता है, हालांकि लोन की सीमा फंड के प्रकार पर निर्भर करती है। डेट और लिक्विड फंड पर आमतौर पर 70 से 80 प्रतिशत तक लोन मिल जाता है, जबकि इक्विटी फंड पर यह सीमा लगभग 50 प्रतिशत रहती है। यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये की जरूरत है तो करीब आठ लाख रुपये के म्यूचुअल फंड निवेश के आधार पर यह राशि मिल सकती है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक की यूनिट्स बिकती नहीं हैं और वे बाजार में निवेशित बनी रहती हैं, जिससे लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण जारी रहता है।

**ब्याज और जोखिम में बड़ा अंतर**

म्यूचुअल फंड पर लोन की ब्याज दर आमतौर पर 9 से 12 प्रतिशत के बीच होती है। कई बैंक और वित्तीय संस्थान इसे ओवरड्राफ्ट सुविधा के रूप में देते हैं, जिसमें केवल इस्तेमाल की गई राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है। हालांकि इसमें एक जोखिम भी है। यदि बाजार गिरता है और म्यूचुअल फंड की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) कम हो जाती है, तो बैंक अतिरिक्त सिक्योरिटी या आंशिक भुगतान की मांग कर सकता है। ऐसा नहीं करने पर गिरवी रखी गई यूनिट्स बेची भी जा सकती हैं।

**किसके लिए कौन सा विकल्प बेहतर**

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए, जो नियमित एसआईपी करते हैं और अच्छा म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो बना चुके हैं, म्यूचुअल फंड पर लोन बेहतर विकल्प माना जाता है। इससे निवेश टूटता नहीं और कंपाउंडिंग का लाभ भी जारी रहता है। स्वरोजगार या व्यवसाय करने वालों के लिए भी म्यूचुअल फंड पर लोन अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बड़ी राशि अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती है।

# एसआईएफ की बढ़ती लोकप्रियता से लंपसम निवेश को मिल रही है चुनौती

**10 लाख की न्यूनतम निवेश सीमा के बावजूद एसआईएफ की ओर बढ़ा रुझान**

**जानकारी**
बिजनेस डेस्क

*विशेषज्ञों का कहना है कि पहले लॉन्ग-शॉर्ट निवेश रणनीति का लाभ केवल कैटेगरी-III अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (एआईएफ) के माध्यम से ही मिल पाता था। लेकिन एआईएफ में निवेश की न्यूनतम सीमा एक करोड़ रुपये होती है, जो अधिकांश निवेशकों की पहुंच से बाहर है। इसके विपरीत एसआईएफ में केवल 10 लाख रुपये से निवेश संभव है। इससे संपन्न निवेशकों को कम पूंजी में वही निवेश रणनीति अपनाने का अवसर मिल रहा है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में एचएनआई निवेशक अब एसआईएफ को अपनाने लगे हैं।*

म्यूचुअल फंड उद्योग में लंपसम निवेशकों के लिए एक नया विकल्प तेजी से उभर रहा है। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) की बढ़ती लोकप्रियता अब पारंपरिक इक्विटी म्यूचुअल फंडों के लंपसम निवेश को चुनौती देती दिखाई दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के महीनों में इक्विटी म्यूचुअल फंडों में लंपसम निवेश घटने के पीछे एसआईएफ की बढ़ती स्वीकार्यता भी एक अहम वजह हो सकती है। पिछले महीने इक्विटी म्यूचुअल फंडों में शुद्ध निवेश (नेट इनफ्लो) में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जबकि दूसरी ओर एसआईपी (एसआईपी) निवेश लगातार मजबूत बना रहा। इससे यह संकेत मिला कि छोटे निवेशक नियमित निवेश जारी रखे हुए हैं, जबकि बड़े निवेशक अब नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं।

**सात माह में सात गुना बढ़ा एयूएम**

पिछले वर्ष शुरू किए गए स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स ने बेहद कम समय में निवेशकों का भरोसा जीत लिया है। अक्टूबर 2025 में इनका एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) लगभग 2,010 करोड़ रुपये था, जो मई 2026 तक बढ़कर 13,814 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया। यानी महज सात महीनों में इनका आकार लगभग सात गुना बढ़ गया। हालांकि एसआईएफ में निवेश के लिए न्यूनतम 10 लाख रुपये की सीमा तय की गई है, फिर भी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई) निवेशकों में इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है।

**हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम पसंद**

एसआईएफ के भीतर सबसे अधिक लोकप्रियता हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम को मिली है। मई 2026 तक इस श्रेणी में करीब 9,709 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो कुल एसआईएफ एसेट्स का लगभग 70 प्रतिशत है। इन योजनाओं में प्रति फोलियो औसत निवेश भी सबसे अधिक रहा। हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में औसत निवेश करीब 33.86 लाख रुपये प्रति फोलियो दर्ज किया गया। इसके मुकाबले इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में यह आंकड़ा 15.64 लाख रुपये और इक्विटी एक्स-टॉप-100 लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में 12.77 लाख रुपये रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह आंकड़ा बताता है कि संपन्न निवेशक इस नई श्रेणी पर तेजी से भरोसा जता रहे हैं।

**क्यों बढ़ रही है एसआईएफ मांग**

बाजार जानकारों के अनुसार एसआईएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह निवेशकों को बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न देने की कोशिश करता है। विशेष रूप से हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट रणनीति बाजार में गिरावट के दौरान भी नुकसान को सीमित रखने का प्रयास करती है। हालिया बाजार सुधार के दौरान इन योजनाओं ने सकारात्मक रिटर्न देकर निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। यही वजह है कि कई निवेशक अब पारंपरिक लंपसम इक्विटी निवेश की जगह एसआईएफ को प्राथमिकता दे रहे हैं।

**म्यूचुअल फंडों पर पड़ेगा असर?**

विशेषज्ञों का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि एसआईएफ पारंपरिक म्यूचुअल फंडों का स्थान ले लेंगे। फिलहाल इसका प्रभाव मुख्य रूप से बड़े लंपसम निवेशकों तक सीमित है। एसआईपी निवेश में किसी प्रकार की कमजोरी देखने को नहीं मिली है। इससे स्पष्ट है कि खुदरा निवेशक अभी भी नियमित निवेश के लिए पारंपरिक म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बनाए हुए हैं। हालांकि यदि एसआईएफ का प्रदर्शन लगातार बेहतर रहता है तो आने वाले वर्षों में बड़े निवेशकों का एक हिस्सा इस श्रेणी की ओर शिफ्ट हो सकता है।

**किन निवेशकों के लिए बेहतर है एसआईएफ**

विशेषज्ञों के अनुसार एसआईएफ उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनके पास पहले से बड़ा निवेश पोर्टफोलियो है और जो बाजार की अस्थिरता के बीच बेहतर जोखिम प्रबंधन चाहते हैं। विशेष रूप से ऐसे निवेशक जो एकमुश्त बड़ी राशि निवेश करते हैं और केवल इक्विटी पर निर्भर नहीं रहना चाहते, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प बन सकता है। इसके अलावा फिक्स्ड इनकम निवेशक, जो सीमित जोखिम के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न चाहते हैं, वे भी भविष्य में इस श्रेणी की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

**अभी भी कई चुनौतियां बाकी**

हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एसआईएफ को व्यापक स्तर पर लोकप्रिय होने में अभी समय लगेगा। निवेशकों में जागरूकता बढ़ाने, वितरकों को प्रशिक्षित करने और लंबी अवधि का प्रदर्शन रिकॉर्ड तैयार होने के बाद ही यह श्रेणी बड़े पैमाने पर स्वीकार की जाएगी। निवेशकों के लिए यह भी जरूरी होगा कि वे केवल शुरुआती प्रदर्शन देखकर निवेश न करें, बल्कि फंड की रणनीति, जोखिम, शुल्क और अपने वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लें।

**लंबी अवधि में बदल सकता है निवेश का परिदृश्य**

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय निवेश उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे निवेशकों की समझ बढ़ेगी, वे पारंपरिक इक्विटी और डेट फंडों से आगे बढ़कर नई निवेश रणनीतियों को भी अपनाएंगे। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड इसी बदलाव का संकेत हैं। यदि इनका प्रदर्शन स्थिर और बेहतर बना रहता है तो आने वाले वर्षों में यह हाई नेटवर्थ निवेशकों के पोर्टफोलियो का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। हालांकि खुदरा निवेशकों के लिए एसआईपी आधारित म्यूचुअल फंड अभी भी सबसे सरल, अनुशासित और प्रभावी निवेश विकल्प बने हुए हैं।

## 20 साल की एसआईपी में सिर्फ पांच फंड ही बने असली 'वेल्थ क्रिएटर'

**बिजनेस डेस्क।** म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों का सपना होता है कि उन्हें लंबे समय तक लगातार बेहतर रिटर्न मिले। हालांकि, ऐसा करने वाले फंड बहुत कम हैं। करीब 600 सक्रिय इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के विश्लेषण में केवल पांच ऐसी योजनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने 3, 5, 10, 15 और 20 वर्ष जैसी सभी प्रमुख निवेश अवधियों में 15 प्रतिशत से अधिक सालाना एसआईपी रिटर्न दिया है। यह विश्लेषण वैल्यू रिसर्च के 29 जून 2026 तक के आंकड़ों पर आधारित है। सबसे खास बात यह है कि इस सूची में कोई भी फ्लेक्सी-कैप या लार्जकैप फंड शामिल नहीं है। दो मिडकैप, दो हेल्थकेयर और एक इंफ्रास्ट्रक्चर थीम आधारित फंड ने निवेशकों को लंबी अवधि में शानदार संपत्ति बनाने का अवसर दिया। यह दर्शाता है कि मजबूत सेक्टरों में लंबे समय तक धैर्य के साथ निवेश करने वाले निवेशकों को बेहतरीन रिटर्न मिला।

**ये हैं पांच सबसे सफल एसआईपी फंड**

- इस सूची में एचएसबीसी मिडकैप फंड (रेगूलर) पहले स्थान पर है। इस फंड ने 3 वर्ष में 20.05%, 5 वर्ष में 21.46%, 10 वर्ष में 18.39%, 15 वर्ष में 18.96% और 20 वर्ष में 17.70% का वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया। निवेशक ने 20 वर्षों तक हर महीने 10,000 की एसआईपी की होती, तो उसका निवेश बढ़कर 1.86 करोड़ हो जाता।
- दूसरे स्थान पर एसीबीआई हेल्थकेयर ऑपर्च्युनिटी फंड (रेगूलर) रहा। इसने 20 वर्षों में 16.80 प्रतिशत वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया और 10,000 मासिक निवेश को लगभग 1.68 करोड़ रुपये में बदल दिया।
- तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मिडकैप फंड रहा। इस फंड ने 20 वर्षों में 16.52 प्रतिशत का रिटर्न दिया और लगभग 1.61 करोड़ का कोष तैयार किया।
- चौथे स्थान पर यूटीआई हेल्थकेयर म्यूचुअल फंड (रेगूलर) रहा, जिसने 20 वर्षों में 15.61 प्रतिशत रिटर्न देते हुए 10,000 की मासिक एसआईपी को लगभग 1.45 करोड़ रुपये तक पहुंचाया।
- पांचवें स्थान पर डीएसपी इंडिया टीआईजीईआर फंड (रेगूलर) रहा। इंफ्रास्ट्रक्चर थीम पर आधारित इस फंड ने 20 वर्षों में 15.40 प्रतिशत रिटर्न दिया और निवेशकों का कोष करीब 1.40 करोड़ रुपये तक पहुंचा दिया।

**अमेरिकी ब्याज दरों, ट्रेजरी यील्ड और वैश्विक अनिश्चितता से बढ़ा दबाव**

# सात माह के निचले स्तर पर सोना-चांदी, ऐसे में क्या करें निवेशक

बिजनेस डेस्क

जुलाई की शुरुआत सर्राफा बाजार के लिए झटके भरी रही। 1 जुलाई को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में तेजी, फेडरल रिजर्व की सख्त मौद्रिक नीति के संकेत और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि सोना और चांदी दोनों सात महीने के निचले स्तर के करीब पहुंच गए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट केवल नकारात्मक संकेत नहीं है, बल्कि लंबी अवधि के निवेशकों के लिए अवसर भी बन सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना 1,701 रुपये यानी 1.19 प्रतिशत टूटकर करीब 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। वहीं सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में और बड़ी गिरावट देखने को मिली। चांदी 5,380 रुपये यानी 2.35 प्रतिशत लुढ़ककर 2.23 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कमजोरी का यही रुख दिखाई दिया। कॉमेक्स पर सोना करीब 4,000 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण स्तर के आसपास सात महीने के निचले स्तर पर कारोबार करता रहा, जबकि चांदी लगभग तीन प्रतिशत गिरकर 57.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

**अमेरिकी फेड की सख्ती बनी सबसे बड़ी वजह**

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट की सबसे बड़ी वजह अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व का सख्त रुख है। हाल के दिनों में फेड अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि यदि महंगाई पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आती है तो इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी की जा सकती है। ब्याज दरें बढ़ने से निवेशकों का रुझान सोने जैसी बिना ब्याज वाली परिसंपत्तियों से हटकर बॉन्ड और अन्य ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि सोने और चांदी पर बिकवाली का दबाव लगातार बना हुआ है।

**ट्रेजरी यील्ड और मजबूत डॉलर का असर**

अमेरिकी सरकारी बॉन्ड यानी ट्रेजरी की यील्ड में तेजी ने भी सोने की चमक फीकी कर दी है। जब ट्रेजरी यील्ड बढ़ती है तो निवेशकों को सुरक्षित और बेहतर रिटर्न वाले विकल्प मिलने लगते हैं। इससे सोने की मांग घटती है। इसके साथ ही डॉलर इंडेक्स में मजबूती आने से भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव बढ़ा। चूंकि सोने का कारोबार डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर मजबूत होने पर अन्य देशों के निवेशकों के लिए सोना महंगा हो जाता है और मांग कमजोर पड़ जाती है।

**मध्य-पूर्व में बढ़ता तनाव भी चिंता का कारण**

मध्य-पूर्व में एक बार फिर बढ़ते तनाव ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। ईरान और अमेरिका के बीच रिश्तों में आई तल्खी तथा शांति वार्ता को लेकर अनिश्चितता ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में ऐसे तनाव के दौरान सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है, लेकिन इस समय ब्याज दरों और डॉलर की मजबूती का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी वैश्विक महंगाई को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। यदि तेल महंगा होता है तो महंगाई बढ़ सकती है, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची रख सकते हैं।

**विशेषज्ञ बोले- जल्दबाजी नहीं, रणनीति के साथ ही करें निवेश**

**अब अमेरिकी आंकड़ों पर टिकी नजर**

बाजार की अगली दिशा काफी हद तक अमेरिका से आने वाले आर्थिक आंकड़ों पर निर्भर करेगी। निवेशकों की नजर जून के **ADP** रोजगार आंकड़ों और नॉन-फार्म पेरोल डेटा पर है। यदि रोजगार के आंकड़े मजबूत आते हैं तो फेड के लिए ब्याज दरें ऊंची बनाए रखने का आधार मजबूत होगा, जिससे सोने पर दबाव बना रह सकता है। वहीं, यदि आंकड़े उम्मीद से कमजोर आते हैं तो ब्याज दरों में नरमी की उम्मीद बढ़ेगी और सोना-चांदी में रिकवरी देखने को मिल सकती है।

**विशेषज्ञों की रायः अभी सतर्कता जरूरी**

सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि फिलहाल तकनीकी रूप से सोना और चांदी दोनों कमजोर स्थिति में हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे बना रहता है तो अगला मजबूत सपोर्ट 3,600 डॉलर प्रति औंस के आसपास दिखाई देता है। इसी तरह चांदी यदि 60 डॉलर प्रति औंस के नीचे टिकती है तो इसमें 50 डॉलर प्रति औंस तक गिरावट की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि लगातार बिकवाली के कारण दोनों धातुएं अब ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुकी हैं। ऐसे में किसी भी सकारात्मक वैश्विक संकेत या कमजोर अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों के बाद तेज तकनीकी रिकवरी भी संभव है।

**क्या यह खरीदारी का सही समय है?**

विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेशकों को घबराने की जरूरत नहीं है। यदि किसी का निवेश लक्ष्य पांच से दस वर्ष या उससे अधिक का है तो ऐसी गिरावट चरणबद्ध निवेश (स्टैगर्ड इन्वेस्टमेंट) का अवसर बन सकती है। एकमुश्त निवेश करने के बजाय किस्तों में खरीदारी करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जा रही है। इससे यदि कीमतें और गिरती हैं तो औसत खरीद मूल्य कम किया जा सकता है। वहीं अल्पकालिक ट्रेडर्स को फेडरल रिजर्व के अगले संकेत, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, डॉलर इंडेक्स और वैश्विक घटनाक्रमों पर लगातार नजर बनाए रखनी चाहिए।

**दीर्घकाल में बनी रहेगी सोने की अहमियत**

सोना सदियों से महंगाई, आर्थिक संकट और वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्प माना जाता रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अल्पकाल में कीमतों में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, लेकिन लंबी अवधि में सोना निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का महत्वपूर्ण माध्यम बना रहेगा। यही कारण है कि वित्तीय सलाहकार कुल निवेश का एक हिस्सा सोना और चांदी जैसी कीमती धातुओं में रखने की सलाह देते हैं। मौजूदा गिरावट को केवल कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक निवेश के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि किसी भी निवेश निर्णय से पहले अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय सलाहकार की राय को जरूर ध्यान में रखना चाहिए।

## खबर संक्षेप

### 10 ग्राम से अधिक हेरोइन सहित युवक दबोचा

**सिरसा।** पुलिस ने गांव बड़ागुढ़ा क्षेत्र से एक युवक को 10 ग्राम 270 मिलीग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान जसविंद्र सिंह के रूप में हुई है। एंटी नारकोटिक्स सेल सिरसा प्रभारी ने बताया कि पुलिस टीम गश्त व चेकिंग के दौरान गांव बड़ागुढा क्षेत्र में मौजूद थी। इसी दौरान सामाने से एक युवक पैदल आता दिखाई दिया जो कि पुलिस को देखकर वापस मुडक़र भागने का प्रयास करने लगा। पुलिस ने शक के आधार पर युवक को काबू कर तलाशी ली तो उसके कब्जे से 10 ग्राम 270 मिलीग्राम हेरोइन बरामद हुई। आरोपी के खिलाफ थाना बड़ागुढा में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

### भाविप शाखा रतिया द्वारा रक्तदान कैम्प आज

**रतिया।** भारत विकास परिषद, शाखा रतिया एवं मां की रसोई रोजाना लंगर सेवा ट्रस्ट, रतिया द्वारा संयुक्त रूप से आज स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रवक्ता जनक राज गोयल ने कहा कि मानव सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं और रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं। आपका केवल एक यूनिट रक्त किसी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति, गंभीर मरीज, थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चे या प्रसूता माता को नया जीवन दे सकता है। रक्तदान पूरी तरह सुरक्षित है। इससे शरीर को कोई हानि नहीं होती, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक माना जाता है। आपका 15 मिनट का समय किसी परिवार की खुशियां लौटा सकता है।

### दो राज्यों के बीच अटका खिलाड़ी, ग्रेडेशन नहीं बनने से परेशान

**सिरसा।** पंजाब के मानसा जिले के गांव झंडा खुर्द निवासी खिलाड़ी दिनेश कुमार अपनी खेल ग्रेडेशन को लेकर गंभीर परेशानी का सामना कर रहा है। खिलाड़ी दिनेश ने बताया कि वह पंजाब के निवासी हैं, लेकिन उन्होंने अपनी खेल प्रतियोगिताएं हरियाणा के सिरसा जिले से खेली हैं। अब दोनों राज्यों की खेल नीतियों के बीच उनका मामला फंस गया है। दिनेश का कहना है कि उनका डोमिसाइल पंजाब का है, लेकिन हरियाणा खेल विभाग यह कहकर ग्रेडेशन देने से मना कर रहा है कि वह हरियाणा के निवासी नहीं हैं। वहीं पंजाब खेल विभाग यह कहकर मामला टाल रहा है कि उन्होंने हरियाणा से खेला है, इसलिए पंजाब उनकी ग्रेडेशन नहीं बना सकता।

### रोडवेज महाप्रबंधक के खिलाफ आंदोलन तेज

**हिसार।** हरियाणा कर्मचारी महासंघ से संबद्ध सेवानिवृत्त कर्मचारी एसोसिएशन की बैठक पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त तहसीलदार नरेश गोयल की अध्यक्षता में क्रांतिमान पार्क में हुई। बैठक में हरियाणा रोडवेज हिसार के महाप्रबंधक के खिलाफ चल रहे आंदोलन को और तेज करने का निर्णय लिया गया। एसोसिएशन ने घोषणा की कि 6 जुलाई को प्रतिनिधिमंडल उपायुक्त, हिसार से मिलकर महाप्रबंधक के तबादले एवं उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की मांग करेगा, जबकि 8 जुलाई को महाप्रबंधक कार्यालय के समक्ष विशाल धरना दिया जाएगा। नरेश गोयल ने बताया कि धरना 51वें दिन में प्रवेश कर चुका है।

### भाजपा जिला कार्यालय में हुए सम्मेलन में कार्यकर्ताओं को दिए संगठनात्मक संदेश

# डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचार आज भी राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा : सुभाष बराला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

**फतेहाबाद।** कार्यकर्ता सम्मेलन में मौजूद सांसद सुभाष बराला व अन्य भाजपा नेता। *फोटो : हरिभूमि*

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती के उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे स्मृति पखवाड़ा के तहत शनिवार को भाजपा जिला कार्यालय में जिला कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राज्यसभा सांसद सुभाष बराला, पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल तथा पूर्व विधायक दुड़ाराम ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीन जोड़ा ने की। मंच पर चेयरमैन बलदेव ग्रोहा, प्रो. रविंदर बलियाला, राजपाल बैनीवाल, जिला परिषद चेयरपर्सन सुमन खीचड़ तथा कार्यक्रम संयोजक संजय रेवड़ी मौजूद रहे।

कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री विकास लालोदा ने किया। सांसद सुभाष बराला ने कहा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे' का संकल्प लेकर राष्ट्रीय एकता की अलख जगाई। उनका संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं बल्कि भारत की आत्मा और स्वाभिमान की रक्षा का आंदोलन था। उन्होंने देशहित को सदैव व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखा। उनके विचार आज भी करोड़ों देशवासियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उनकी सोच को साकार करते हुए जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी गई। प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता का दायित्व है कि वह डॉ. मुखर्जी के राष्ट्रवाद, सेवा और समर्पण के विचारों को जन-जन तक पहुंचाए। उनका जीवन हमें राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है।

पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल ने कहा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय राजनीति के ऐसे युगपुरुष थे जिन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना किया। उनका जीवन त्याग, तपस्या और राष्ट्रसेवा का अनुपम उदाहरण है। आज की युवा पीढ़ी को उनके विचारों और संघर्ष से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

### उनका संघर्ष हमें निडर होकर कार्य करने की प्रेरणा देता है : जोड़ा

भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय जनसंघ के संस्थापक और राष्ट्रवाद के प्रबल पुरोधा थे। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण भारत माता की सेवा के लिए समर्पित किया। उनका संघर्ष हमें राष्ट्रहित में निडर होकर कार्य करने की प्रेरणा देता है। भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता उनके बताए मार्ग पर चलकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रत्येक कार्यकर्ता को उनके आदर्शों का अनुसरण कर समाज और राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर अशोक जाखड़, इंद्र गावड़ी, जगदीश शर्मा, सविता टुटेजा, अवतार मोंगा, जगदीप मोंगा, राधाकृष्ण नारंग, मुल्खराज चावला, नीलाशी शर्मा, राममेहर धारसूल, शम्मी ढींगड़ा, सुभाष खिलेरी, मनदीप योग, विकास शर्मा, अनिल सिहाग, राजू मैहता खुंबर सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

**भट्टूकलां।** प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते प्राचार्य। *फोटो : हरिभूमि*

## पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में अनिता ने मारी बाजी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भट्टूकलां

- राजकीय महाविद्यालय भट्टूकलां में चुनावी साक्षरता क्लब के तत्वाधान में हुई प्रतियोगिता
- एसआईआर का कार्य मतदाता सूची की शुद्धता के लिए जरूरी : सुभाष सिहाग

राजकीय महाविद्यालय भट्टूकलां में चुनावी साक्षरता क्लब के तत्वाधान में विशेष गहन पुनर्निरीक्षण तथा मतदाता जागरूकता विषय पर पोस्टर मेंकिंग प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़ चढक़र भाग लिया। प्रतियोगिता में अनिता ने प्रथम स्थान, सानिया ने दूसरा स्थान और सुष्मिता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

प्राचार्य डॉक्टर सुभाष सिहाग ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि एसआईआर का कार्य मतदाता सूची की शुद्धता और लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को सरकार की नीतियों का प्रचार प्रसार करके समाज के लोगों को जागरूक करना चाहिए। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ राजेंद्र कुमार ने बताया कि चुनावी साक्षरता क्लब के तहत करवाये जाने वाली प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थी समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी और प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को सरकार द्वारा चलाई जा रही गहन पुनर्निरीक्षण प्रक्रिया में न केवल सहयोग देना है बल्कि अपने आसपास समाज में भी लोगों को जागरूक करना है। निर्णायक मंडल में प्रोफेसर राजेश कुमार, अमित कुमार और दर्शन सिंह शामिल रहे। इस मौके गगनदीप, अनिल, अनिल कुमार, डॉ कीर्ति चौधरी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

## खेल विभाग में शामिल होने से योगासन को मिलेगी उड़ान : आर्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

हरियाणा सरकार द्वारा योगासन स्पोर्ट्स को आयुष विभाग के स्थान पर खेल विभाग के अंतर्गत शामिल किए जाने के निर्णय का योग जगत ने स्वागत किया है। पतंजलि योग समिति व भारत स्वाभिमान हिसार मंडल प्रभारी मदन गोपाल आर्य तथा जिला मीडिया प्रभारी सुरेश मंगला ने इसे एक ऐतिहासिक और दूरदर्शी कदम बताया है। मदन गोपाल आर्य ने कहा कि योग एक संपूर्ण जीवन-पद्धति और चिकित्सा पद्धति के रूप में पहले की तरह ही आयुष विभाग के अंतर्गत संचालित होता रहेगा। केवल प्रतियोगितात्मक योगासन को खेल गतिविधि के रूप में खेल विभाग में शामिल किया गया है। खेल विभाग के अंतर्गत आने से अब योगासन खिलाड़ियों को आधुनिक प्रशिक्षण, उत्कृष्ट खेल सुविधाएं, नियमित प्रतियोगिताएं, खेल नीति के तहत प्रोत्साहन और छात्रवृत्तियां मिल सकेंगी। इससे खिलाड़ियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने के अधिक अवसर मिलेंगे। इस निर्णय के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और खेल मंत्री का आभार जताया।मदन गोपाल आर्य और सुरेश मंगला ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मन की बात कार्यक्रम में योग के वैश्विक विस्तार और अहमदाबाद में आयोजित प्रथम विश्व योगासन चैंपियनशिप का उल्लेख किए जाने का भी स्वागत किया।

### परीक्षार्थियों के लिए आढ़ती एसो. ने लगाई छबील

**सिरसा।** हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा देने आए परीक्षार्थियों और उनके साथ आए अभिभावकों की सुविधा के लिए स्थानीय नई अनाज मंडी में आढ़ती एसोसिएशन द्वारा एक विशेष छबील का आयोजन किया गया। यह सामाजिक पहल आढ़ती एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रेम बजाज के नेतृत्व में की गई, जिसमें परीक्षार्थियों को ठंडे पानी की व्यवस्था की गई। परीक्षा केंद्रों के आसपास सुबह से ही परीक्षार्थियों और उनके परिजनों की भारी भीड़ जुटने लगी थी। दूर-दराज से आए लोगों को किसी तरह की असुविधा न हो, इस बात को ध्यान में रखते हुए आढ़ती एसोसिएशन ने अनाज मंडी के मुख्य मार्ग पर छबील लगाई। इस मौके पर महासचिव राजेंद्र नढा, कोषाध्यक्ष कृष्ण गोयल, वरिष्ठ आढ़तीगण धर्मपाल जिंदल, विनोद खत्री, भीम कंबोज, अनीश गर्ग, अंकित गोयल आदि मौजूद रहे।

## योग दिव्य मंदिर में मासिक हवन यज्ञ एवं लंगर सेवा आज

**फतेहाबाद।** रतिया रोड स्थित योग दिव्य मंदिर में मासिक हवन यज्ञ कार्यक्रम का आयोजन 5 जुलाई रविवार को किया जाएगा। कार्यक्रम के तहत प्रातः 9 बजे हवन यज्ञ, 10 बजे सत्संग समागम तथा 11 बजे लंगर प्रसादी का वितरण किया जाएगा। सेवादार कर्मचंद सरदाना एवं धर्मपाल चावला ने बताया कि योग दिव्य मंदिर पिछले 40 वर्षों से निस्वार्थ भाव से निशुल्क सेवाएं प्रदान कर रहा है। मंदिर परिसर में नियमित रूप से योग कक्षाओं का आयोजन किया जाता है। प्रतिदिन प्रातः 6 बजे से 8 बजे तक महिला एवं पुरुषों के लिए संयुक्त योग कक्षा आयोजित होती है, जबकि सायंकाल महिलाओं के लिए अलग से निशुल्क योग कक्षा लगाई जाती है, जिसका बड़ी संख्या में लोग लाभ उठा रहे हैं।

योग दिव्य मंदिर में योग एवं हर्बल जड़ी-बूटियों के माध्यम से अनेक असाध्य रोगों से पीड़ित लोगों का उपचार भी किया जा रहा है। मंदिर परिसर में एक हर्बल पार्क भी स्थापित किया गया है, जिसमें निर्गुंडी, लेमनग्रास, दमबेल, सुदर्शन, गिलोय, सहजन सहित अनेक औषधीय पौधे लगाए गए हैं। ये जड़ी-बूटियां विभिन्न रोगों के उपचार में लाभकारी सिद्ध हो रही हैं।

## गांव तलवाड़ा में शिविर में 21 नशा पीड़ितों ने लिया लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

जिलेभर में चलाए जा रहे ऑपरेशन जीवन ज्योति अभियान के तहत नशा मुक्ति टीम द्वारा जाखल के गांव तलवाड़ा में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। नशा मुक्ति टीम फतेहाबाद ने एसआई सुंदर के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग एवं आयुष विभाग के सहयोग से यह नशा मुक्ति शिविर आयोजित किया गया।

शिविर का उद्देश्य नशे की गिरफ्त में आए लोगों को उपचार, परामर्श एवं पुनर्वास की मुख्यधारा से जोडऩा रहा। शिविर के दौरान विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा नशा पीड़ितों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। आवश्यकतानुसार रक्त जांच की गई तथा प्रत्येक पीड़ित की व्यक्तिगत काउंसलिंग कर उनकी स्वास्थ्य स्थिति का आकलन किया गया। चिकित्सकीय परामर्श के उपरांत पीड़ितों को उनकी आवश्यकता के अनुसार एलोपैथिक, आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक दवाइयां उपलब्ध कराई गई। साथ ही योग शिक्षक द्वारा नियमित योग, प्राणायाम एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर नशे से मुक्ति पाने के प्रभावी उपायों की जानकारी दी गई।

### 12 नए नशा पीड़ित चिह्नित

इस शिविर में 12 नव चिन्हित नशा पीड़ितों सहित कुल 21 व्यक्तियों ने भाग लेकर स्वास्थ्य सेवाओं एवं परामर्श का लाभ उठाया। नशा मुक्ति टीम ने सभी लाभार्थियों को उपचार का निर्धारित कोर्स पूरा करने, चिकित्सकों के संपर्क में रहने तथा दोबारा नशे की ओर न लौटने के लिए प्रेरित किया। शिविर के उपरांत नशा मुक्ति टीम ने सीएचसी रतिया पहुंचकर वहां उपचाराधीन नशा पीड़ितों से भी मुलाकात की। टीम ने उनकी काउंसलिंग करते हुए उन्हें नियमित उपचार जारी रखने, सकारात्मक सोच अपनाने तथा परिवार और समाज के सहयोग से नशामुक्त जीवन की ओर आगे बढऩे के लिए प्रेरित किया।

## सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता पुरस्कार के लिए 31 तक करें आवेदन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

- इसकी घोषणा प्रतिवर्ष 31 अक्टूबर, यानी राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर की जाती है
- चयनित विजेताओं को भारत के राष्ट्रपति से मिलता है सम्मान

राष्ट्र की एकता, अखंडता और सामाजिक सद्भाव को मजबूत बनाने में उल्लेखनीय योगदान देने वाले नागरिकों, सामाजिक संस्थाओं और संस्थानों से सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता पुरस्कार योजना के तहत ऑनलाइन आवेदन मांगे गए हैं। भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा दिए जाने वाले इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए इच्छुक व्यक्ति, संस्थान और संगठन 31 जुलाई तक पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इस पुरस्कार का मुख्य उद्देश्य उन लोगों के योगदान को मान्यता देना है, जिन्होंने अपने कार्यों, प्रयासों और नवाचारों से राष्ट्रीय एकता की भावना को सशक्त बनाया है तथा समाज में भाईचारे, समरसता और राष्ट्रहित की सोच को नई दिशा दी है। सरदार वल्लभभाई पटेल के आदर्शों से प्रेरित यह पुरस्कार देश में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी घोषणा प्रतिवर्ष 31 अक्टूबर, यानी राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर की जाती है तथा चयनित विजेताओं को भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जाता है। एक वर्ष में अधिकतम तीन पुरस्कार ही प्रदान किए जाते हैं, ताकि इसकी गरिमा और विशिष्टता बनी रहे।

## सेक्टर 20 के लक्ष्मी नारायण पार्क के नवीनीकरण की विशेष पहल

**सिरसा।** हुडा सेक्टर 20 स्थित श्री लक्ष्मी नारायण पार्क के नवीनीकरण और सेक्टर के सभी पार्कों में पानी की किल्लत को दूर करने के लिए एक विशेष पहल की गई है। पार्कों को पर्याप्त पानी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से नए ट्यूबवेल लगाने के कार्य का औपचारिक शुभारंभ कर दिया गया है। इस विकास कार्य की शुरुआत बेहद गरिमामयी ढंग से हुई। कार्यक्रम के आरंभ में भूमि पूजन और विशेष पूजा-अर्चना की गई, ताकि कार्य बिना किसी बाधा के सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

वार्ड नंबर 3 के पार्षद रमेश मेहता ने जानकारी देते हुए बताया कि इस परियोजना का शुभारंभ श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर के पूर्व प्रधान विजय कुमार गर्ग के कर-कमलों द्वारा किया गया। पार्षद मेहता ने कहा कि सेक्टर के पार्कों को हरा-भरा रखना और वहां पानी की सुचारू व्यवस्था करना उनकी प्राथमिकताओं में से एक है। इस नए ट्यूबवेल के लगने से सेक्टर के सभी पार्कों को पर्याप्त पानी मिल सकेगा। इसके अलावा वार्ड के सभी पार्कों का एस्टीमेट बनकर तैयार हो चुका हैं, जिस पर कार्य शीघ्र शुरू हो जाएगा। इस शुभ अवसर पर स्थानीय निवासियों में भारी उत्साह देखने को मिला।कार्यक्रम के दौरान मंदिर के वर्तमान प्रधान अशोक कुमार बंसल, मेघनाथ शर्मा, सुरेश भारद्वाज, दीपक गुप्ता, ऋ षि शर्मा, दुर्गा सिंह राठौड़ सहित सेक्टर के कई अन्य गणमान्य नागरिक और प्रबुद्ध जन मौजूद रहे।

## आढ़तियों ने अनाज मंडी ओढ़ां की समस्याओं को लेकर मांगपत्र सौंपा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| ओढां

**ओढ़ां।** मार्केट कमेटी के चेयरमैन सतपाल शर्मा को मांगपत्र सौंपते हुए पवन गर्ग व योकेश शर्मा। *फोटो : हरिभूमि*

अनाज मंडी ओढ़ां की समस्याओं को लेकर आढ़तियों ने मार्केट कमेटी कालांवाली के चेयरमैन सतपाल शर्मा से मुलाकात की और उन्हें अपनी समस्याओं से अवगत करवाया। आढ़ती योकेश शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि उन्होंने चेयरमैन मार्केट कमेटी कालांवाली को अनाज मंडी ओढां की समस्याओं के बारे में बताया कि अनाज मंडी में एक धर्म कांटा लगवाने बारे, मंडी के चारों तरफ की चारदीवारी को ऊंचा करके पूरा करवाने बारे, गेट नंबर दो के साथ पीने के पानी की व्यवस्था व टायलेट बाथरूम बनवाने बारे और ओढां मंडी में बाजरे की खरीद शुरू करवाने बारे मांगपत्र सौंपा। चेयरमैन सतपाल शर्मा ने मांग पत्र को लेकर अनाज मंडी निगरानी कमेटी डबवाली के पूर्व चेयरमैन पवन गर्ग ओढ़ा, अबूबशहर मंडल अध्यक्ष हरजिंदर सिंह, वकील सिंह मंडल महामंत्री उपस्थित थे।

*निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से चलाया जागरूकता अभियान*

## कटे होंठ-तालू अब नहीं बनेगा जीवनभर का दर्द

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

**फतेहाबाद।** ग्रामीणों को जागरूक करते स्माइल ट्रेन एनजीओ के सदस्य। *फोटो : हरिभूमि*

कटे होंठ एवं तालू (क्लेफ्ट) जैसी जन्मजात समस्या के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाने एवं प्रभावित बच्चों को समय पर निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एनजीओ स्माइल ट्रेन द्वारा विश्वास चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से जिला फतेहाबाद के गांव दहमन व चौबारा में विशेष जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को बताया गया कि क्लेफ्ट कोई अभिशाप या लाइलाज बीमारी नहीं है, बल्कि इसका उपचार पूरी तरह संभव है। समय पर सर्जरी एवं उचित चिकित्सा के माध्यम से कटे होंठ एवं तालू के साथ जन्म लेने वाले बच्चे भी अन्य बच्चों की तरह सामान्य, स्वस्थ एवं सम्मानजनक जीवन जी सकते हैं। विशेषज्ञों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बताया कि स्माइल ट्रेन भारत भर में अपने साझेदार अस्पतालों के माध्यम से कटे होंठ एवं तालू की सर्जरी, आवश्यक उपचार तथा संबंधित चिकित्सा सेवाएं पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराती है।

### 7.5 लाख से अधिक सर्जरी में सहयोग किया

संस्था अब तक भारत में 7.5 लाख से अधिक क्लेफ्ट सर्जरी का सहयोग कर चुकी है तथा 30 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में 130 से अधिक साझेदार अस्पतालों के माध्यम से निःशुल्क उपचार उपलब्ध करा रही है।

### एबीवीपी ने कुलपति को सौंपा पांच सूत्रीय ज्ञापन

*विश्वविद्यालय द्वारा बंद किए जा रहे विधि विभाग में एल.एल.एम. की कक्षाओं एवं अन्य सभी शैक्षणिक गतिविधियों को सुचारु करने की मांग*

## छात्र हित से जुड़ी समस्याओं के शीघ्र समाधान की उठाई मांग

एजेंसी ▶▶| सिरसा

छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) ने छात्र हितों से जुड़े विभिन्न मुद्दों को लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विजय कुमार को पांच सूत्रीय ज्ञापन सौंपते हुए समस्याओं के शीघ्र समाधान की मांग की। जिला संयोजक मोहित बिश्नोई ने बताया कि एबीवीपी वर्ष 1949 से छात्र हित एवं राष्ट्र हित के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इसी उद्देश्य के तहत संगठन ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की प्रमुख समस्याओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कुलपति को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में मांग की गई कि विश्वविद्यालय द्वारा बंद किए जा रहे विधि विभाग में एल.एल.एम. की कक्षाओं एवं अन्य सभी शैक्षणिक गतिविधियों का नियमित एवं सुचारु संचालन सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही छात्रावास जाने वाले मार्ग की चौड़ाई बढ़ाकर आवागमन को सुरक्षित एवं सुविधाजनक बनाया जाए।

***ये रहे उपस्थित***

*इस अवसर पर प्रांत सहमंत्री सुनील शास्त्री, विभाग संयोजक बलविंद्र ढकरवाल, जिला संयोजक मोहित बिश्नोई, विभाग छात्रा प्रमुख कु. ममता, रिशपाल सिंह, जगतार सिंह, मुकेश, विशांत, अमित, अरविंद, गीता, काजू, प्रदीप, संजय सहित विद्यार्थी परिषद के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।*

### सभी मांगों पर शीघ्र सकारात्मक कार्रवाई की जाएगी : कुलपति

एबीवीपी ने विश्वविद्यालय परिसर में खराब पड़े वॉटर कूलरों की तत्काल मरम्मत कराने तथा आवश्यकता वाले स्थानों पर नए वॉटर कूलर स्थापित करने की भी मांग की। छात्रावासों के शौचालयों की शीघ्र मरम्मत एवं नियमित साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के साथ-साथ विश्वविद्यालय के खेल मैदान का सौंदर्यीकरण कराने और विद्यार्थियों के लिए आवश्यक खेल उपकरण उपलब्ध कराने की भी मांग रखी गई। कुलपति प्रो. विजय कुमार ने विद्यार्थी परिषद के प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि सभी मांगों पर गंभीरता से विचार करते हुए शीघ्र सकारात्मक कार्रवाई की जाएगी, ताकि विद्यार्थियों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

## खबर संक्षेप

### वैश्य समाज का संगठन संवाद कार्यक्रम 19 को

**सिरसा।** अग्रवाल वैश्य समाज विधानसभा सिरसा मुख्य इकाई की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसमें सिरसा मुख्य इकाई विधानसभा का विस्तार करने के साथ-साथ आगामी सांगठनिक गतिविधियों पर चर्चा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि जिला सिरसा इकाई द्वारा आगामी 19 जुलाई को अग्रवाल सेवा सदन में एक भव्य संगठन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, जिसमें अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेशाध्यक्ष अशोक बुवानीवाला सहित प्रदेश की पूरी कार्यकारिणी शिरकत करेगी। इस मौके पर जिलाध्यक्ष सन्नी बांसल, जिला महासचिव सुनील सिंगला सहित अन्य मौजूद रहे।

### घर में चोरी करने का दूसरा आरोपी गिरफ्तार

**फतेहाबाद।** घर में चोरी के मामले में कार्रवाई जारी रखते हुए थाना शहर रतिया पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक क पहचान बठिंडा के नंदगढ़ निवासी हरप्रीत सिंह उर्फ जुगनू पुत्र मलकीत सिंह के रूप में हुई है। पूछताछ के उपरांत उसे न्यायालय में पेश किया गया, जहां से न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इससे पहले इसी मामले में एक आरोपी को पुलिस पहले ही काबू कर चुकी है। न्यू टाउन निवासी रमनदीप पुत्र ओमप्रकाश ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि 4 जून की रात अज्ञात व्यक्ति उनके घर में घुसकर मोटरसाइकिल, करीब 35 हजार रुपये नकद, एक महंगी घड़ी, कपड़े, जूते तथा अन्य घरेलू सामान चोरी कर ले गए थे।

### रिटायर्ड कर्मचारी एसो. की मासिक बैठक 7 को

**फतेहाबाद।** ऑल रिटायर्ड कर्मचारी वेलफेयर एसोसिएशन की मासिक बैठक 7 जुलाई मंगलवार को प्रातः 9 बजे जाट धर्मशाला के पास स्थित पुराना रेस्ट हाऊस, फतेहाबाद में होगी। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान मुंशीराम कम्बोज करेंगे। यह जानकारी देते हुए एसोसिएशन के महासचिव सुभाष चन्द्र चौहान ने बताया कि बैठक में रिटायर्ड कर्मचारियों को 8वें वेतन आयोग का लाभ देने सहित विभिन्न मांगों पर चर्चा की जाएगी वहीं पीछे हुए खर्च का लेखा-जोखा भी रखा जाएगा। बैठक में सरकार से मांग की जाएगी कि नियमित और सेवानिवृत्त कर्मचारियों को मिलने वाली एक माह के वेतन के बराबर एलटीसी सुविधा को पुनः शुरू किया जाए।

### राइस मिल से चावल चोरी करने के आरोपी पकड़े

**फतेहाबाद।** राइस मिल से चावल एवं ग्वार सीड चोरी के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना जाखल पुलिस ने तीन अन्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए युवकों की पहचान जाखल की बाजीगर बस्ती निवासी मनोज पुत्र सतपाल, बिपन पुत्र सतपाल तथा जाखल की गुरुद्वारा बस्ती निवासी अनमोल पुत्र अशोक के रूप में हुई है। इससे पहले पुलिस इसी मामले में दो आरोपियों को काबू कर चुकी है। थाना जाखल प्रभारी पीएसआई संजय ने बताया कि जाखल मंडी निवासी अमन गर्ग ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि उनके पिता के नाम से संचालित दलीप चंद राइस एंड जनरल मिल से 12 जून की रात चोर चावल व ग्वार सीड चोरी कर ले गए।

### अनुसूचित जाति के अभ्यर्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दिया जाएगा निः शुल्क कौशल प्रशिक्षण

**फतेहाबाद।** हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम के माध्यम से अनुसूचित जाति के महिला एवं पुरुष अभ्यर्थियों के लिए विभिन्न व्यावसायिक ट्रेडों में निशुल्क गैर-आवासीय कौशल प्रशिक्षण आयोजित करवाया जा रहा है। इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की अवधि 38 से 75 दिन तक होगी, जो हरियाणा कौशल विकास मिशन के निर्धारित मानकों के अनुसार संचालित किए जाएंगे। हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम के क्षेत्रीय अधिकारी विष्णु ने बताया कि इन पाठ्यक्रमों में सहायक ब्यूटी थैरेपिस्ट, सहायक हेयर ड्रेसर एवं स्टाइलिस्ट, ब्राइडल फैशन एवं पोर्टफोलियो मेकअप आर्टिस्ट, स्व-रोजगार दर्जी तथा सहायक फॉल्स सीलिंग एवं ड्रायवॉल इंस्टॉलर जैसे प्रशिक्षण शामिल हैं। इनमें न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 8वीं या 10वीं उत्तीर्ण निर्धारित की गई है। प्रशिक्षण के लिए आवेदनकर्ता की आयु 18 से 42 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा परिवार पहचान पत्र में सत्यापित पारिवारिक वार्षिक आय 3 लाख रुपये तक होनी आवश्यक है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 9315429403, 8291554800, 7988727916

## ग्रामीणों का अल्टीमेटम: दो दिन में हो समाधान नहीं तो जलघर पर जड़ेंगे ताला

# कुम्हारिया में पेयजल संकट गहराया ग्रामीणों ने जलघर जाकर रोष जताया

ग्रामीण बोले, पानी किल्लत के चलते टैंकर मांगवाने पड़ रहे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चोपटा

पेयजल किल्लत को लेकर गांव के जलघर में रोष प्रदर्शन करते ग्रामीण।

भीषण गर्मी के बीच गांव कुम्हारिया में पेयजल संकट गहराता जा रहा है। लगभग 150 घरों में जन स्वास्थ्य विभाग की पेयजल लाइन से पर्याप्त पानी नहीं पहुंच रहा, जिससे विशेषकर महिलाओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गांव कुम्हारिया में पेयजल किल्लत को लेकर लोगों ने जल घर में जाकर रोष प्रदर्शन किया। ग्रामीणों के अनुसार जन स्वास्थ्य विभाग की आपूर्ति पिछले दो महीने से बिलकुल ही नहीं हो पा रही है।

नतीजतन लोगों को पीने के लिए पर्याप्त स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं हो रहा। ग्रामीणों ने कई बार विभागीय अधिकारियों को समस्या से अवगत कराया, लेकिन अब तक स्थायी समाधान नहीं हो पाया है। रोषित लोगों ने जल घर में जाकर रोष प्रदर्शन किया। बलबीर डारा, कृष्ण कुमार डारा, बलबीर नंबरदार, सांवरा, अंकित मेव, रामचंद्र, सुरेश कुमार, अर्जुन मेव, विक्रम सिंह, महेंद्र, हनुमान, मनीराम, धर्मपाल सहित कई ग्रामीणों ने गांव के जल घर में रोष प्रदर्शन करते हुए कहा कि अगर जल्द पानी सप्लाई का प्रबंध नहीं हुआ तो वह सोमवार को जलघर पर ताला जड़ेंगे और धरना देंगें। ग्रामीणों का कहना है कि गांव के जलघर में पानी के तीन टैंक होने के बावजूद भी भयंकर गर्मी में पीने का पानी सप्लाई नहीं किया जा रहा है। ग्रामीणों को मजबूरन 500 रुपए देकर पानी के टैंकर डलवाने पड़ रहे हैं और एक टैंकर का पानी मात्र 2 से 5 दिन में ही समाप्त हो जाता है।

### एक साल से पानी को तरस रहे ग्रामीण

ग्रामीणों ने बताया कि उन्होंने जन स्वास्थ्य विभाग के सभी अधिकारियों को समस्या से अवगत करवा दिया है लेकिन बार-बार चक्कर कटवाने के अलावा कोई समस्या का कोई समाधान नहीं किया गया है। ग्रामीणों ने बताया कि करीब 150 घरों में पिछले 1 साल से पीने के पानी की समस्या गंभीर बनी हुई है और इस समय भयंकर गर्मी में पानी की किल्लत से काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है,। पर्याप्त मात्रा में पानी की आपूर्ति नहीं की जा रही है। इन्होंने बताया कि उन्होंने जन स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारियों को कई बार पीने के पानी की समस्या हल करने के लिए अवगत करवाया गया लेकिन अधिकारियों ने बार-बार चक्कर कटवाने के अलावा इस समस्या की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्हें मजबूरन जल घर के गेट को ताला लगाना पडेगा और जब तक पीने के पानी की समस्या का समाधान नहीं होगा तब तक ताला लगा रहेगा। इनका कहना है कि जलघर के कर्मचारी भी गांव में पीने की पानी की समस्या को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। जब इस बारे में ग्रामीणों ने जन स्वास्थ्य विभाग के जेई हेमंत से बात की तो उन्होंने बताया की गांव में कहां-कहां पेयजल की समस्या है उसका पता लगाकर जल्द समाधान करवाया जाएगा।

# अमारा ग्रीन ने हुडा में चलाया सफाई अभियान

सिरसा। अमारा ग्रीन हुडा में सफाई अभियान चलाते हुए।

■ एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने सड़कों की सफाई की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

शहर के वैदवाला रोड स्थित अमारा ग्रीन की ओर से सामाजिक सरोकार के तहत शनिवार को हुडा सेक्टर में सफाई अभियान चलाया गया। इस अभियान में हुडा रेजीडेंट्स वेल्फेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों व सदस्यों ने सक्रिय हिस्सेदारी की और अपने हाथों से सडक़ें साफ की और कचरा उठाया। अभियान के तहत एरिया से पॉलिथिन कचरे को एकत्रित किया गया। सडक़ किनारे पौधों की कटाई-छंटाई की गई। आरडब्ल्यूए के प्रधान राजपाल सिंह ने बताया कि हुडा सेक्टर के लोग एक परिवार की भांति रहते हैं और सामाजिक कार्यों में सभी बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। उन्होंने बताया कि अमारा ग्रीन द्वारा एक सामाजिक कार्य किया जा रहा है, जिसमें उनकी तमाम एसोसिएशन सहयोगी है। उन्होंने लोगों से स्वच्छता का आह्वान किया।

### ये रहे मौजूद

इस अभियान में बलबीर बेनीवाल, गौरव जिंदल, अशोक बांसल, डीसी रंगा, दीपक गुप्ता, राजेंद्र छापोला, शिवकुमार बिश्नोई, पवन गुप्ता, बलबीर भांभू, डॉ. मदनलाल, सुखबीर सिंवर, नरेंद्र शम्मी, भाल सिंह गोदारा, टेकचंद, लक्ष्मीचंद, आरपी सिंह, कुलदीप सिंह, राम सिंह बेनीवाल, डॉ. आरपी सिंह, सतवंत कौर, छिंद्रपाल कौर, अनु सिंगला, बिरमा देवी, निर्मला देवी के अलावा अमारा ग्रीन से एसपी सेठी, जगदीश बिश्नोई, धीरज मेहता व अन्य शामिल हुए। श्रीमत ब्रिज एलएलपी के डायरेक्टर माधव जैन ने सफाई अभियान में सहयोग के लिए आरडब्ल्यूए के पदाधिकारियों, सदस्यों व निवासियों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि अमारा ग्रीन द्वारा अपने सामाजिक सरोकार के तहत ऐसे आयोजन किए जाते है। चूंकि समाज के प्रति हमारा भी कुछ कत्र्तव्य बनता है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी ऐसे आयोजन किए जाते रहेंगे।

# लायंस क्लब रतिया सिटी ने पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण पखवाड़े का शुभारंभ किया

■ पदाधिकारियों ने पौधों को बचाने का भी आह्वान किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रतिया

रतिया। पौधारोपण करते लायंस क्लब के सदस्य।

लायंस क्लब रतिया सिटी द्वारा पर्यावरण संरक्षण पखवाड़े के तहत शनिवार को बुढलाडा रोड स्थित अशोका आयल कंपनी के पीछे 50 पौधों का रोपण कर अभियान का शुभारंभ किया गया। क्लब के अध्यक्ष गोपालचंद कुलरियाँ ने बताया कि लायंस क्लब रतिया सिटी पिछले 26 वर्षों से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर सेवाएं प्रदान कर रहा है। जुलाई माह में पर्यावरण संरक्षण पखवाड़ा मनाया जाता है, जिसके अंतर्गत क्लब पिछले कई वर्षों से प्रतिवर्ष 500 से 1000 पौधे विभिन्न स्थानों पर लगाता आ रहा है। उन्होंने बताया कि क्लब ऐसे स्थानों का चयन करता है, जहां पौधों की नियमित देखभाल एवं संरक्षण सुनिश्चित हो सके, ताकि पौधे विकसित होकर पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे सकें। वृक्षारोपण केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि देखभाल भी करनी चाहिए।

### पाक में ऐतिहासिक गुरुद्वारा ध्वस्त करने पर रोष जताया

**सिरसा।** पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित सिखों की ऐतिहासिक और धार्मिक विरासत पर एक बार फिर गहरा आघात हुआ है। फरूखाबाद में स्थित लगभग 125 वर्ष पुराने ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा साहिब को एक स्थानीय व्यवसायी द्वारा बुलडोजर चलाकर पूरी तरह से जमींदोज कर दिया गया। इस घटना को लेकर सिख नेता अंग्रेज सिंह ने गहरी चिंता और आक्रोश व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह घटना पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्थलों की दयनीय स्थिति को बयां करती है। उन्होंने कहा कि यह कोई साधारण गुरुद्वारा नहीं था, बल्कि इसका निर्माण वर्ष 1901 के आसपास सिंह सभा आंदोलन के ऐतिहासिक दौर में किया गया था। लाहौर से लगभग 70 किलोमीटर दूर स्थित यह पवित्र स्थल विरासत का एक बड़ा केंद्र था।

# रविन्द्र ग्रोवर भिरड़ाना मंडल के प्रधान व चन्द्र गेरा बने सलाहकार

■ अरोड़ा खत्री पंजाबी कम्युनिटी ने ग्रामीण क्षेत्रों में किया विस्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। भिरड़ाना मंडल के पदाधिकारियों को बधाई देते ऑल इंडिया अरोड़ा खत्री पंजाबी कम्युनिटी के सदस्य।

शहरी क्षेत्रों में समाज के लोगों को एकजुट करने के बाद ऑल इंडिया अरोड़ा खत्री पंजाबी कम्युनिटी द्वारा अब ग्रामीण क्षेत्रों में संगठन को मजबूत किया जा रहा है। इसी कड़ी में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सूर्यवंशी साहिब दयाल वधवा के मार्गदर्शन में प्रदेशाध्यक्ष ओमप्रकाश चुघ द्वारा जिले के भिरड़ाना मंडल में नई नियुक्तियां की गई हैं। संगठन के अनाज मण्डी स्थित कार्यालय में आयोजित बैठक के दौरान प्रदेशाध्यक्ष द्वारा रविन्द्र ग्रोवर को भिरड़ाना मंडल का प्रधान मनोनीत किया गया। इसके साथ ही, समाज के अनुभवी चेहरे चन्द्र गेरा को भिरड़ाना मंडल के सलाहकार पद की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस मौके पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सूर्यवंशी साहिब दयाल वधवा और प्रदेशाध्यक्ष ओमप्रकाश चुघ ने उन्हें बधाई दी।

# ढूकड़ा में कबड्डी खिलाडियों को बांटी स्पोर्ट्स किट

■ सरपंच राजेंद्र ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ढूकड़ा के 33 कबड्डी खिलाडिय़ों को ग्राम पंचायत की ओर से नई स्पोर्टस किट वितरित दी गई। इस पहल का नेतृत्व गांव के युवा सरपंच राजेंद्र ढूकड़ा ने किया। विद्यालय परिवार ने ग्राम पंचायत एवं सरपंच का सम्मान कर उनके प्रति आभार व्यक्त किया। प्राचार्या मोना पुरी ने बताया कि यह विद्यालय एवं पूरे गांव के लिए अत्यंत गौरव का विषय है कि अब विद्यालय के 33 कबड्डी खिलाड़ी एक समान आकर्षक स्पोर्ट्स यूनिफॉर्म में विभिन्न जिला, राज्य एवं अन्य खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि एक समान खेल पोशाक खिलाडिय़ों में अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना का विकास करती है तथा विद्यालय और गांव की एक अलग पहचान भी स्थापित करती है। प्राचार्या ने ग्राम पंचायत एवं विशेष रूप से सरपंच राजेंद्र ढूकड़ा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे सदैव विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित रहते हैं। शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों, आधारभूत सुविधाओं तथा विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के लिए वे समय-समय पर नई योजनाएं लेकर आते हैं।

# चौधरी भजनलाल और गोबिंद राय बत्रा की आदमकद प्रतिमाएं स्थापित की जाए

■ विधायक बलवान सिंह ने उपायुक्त को पत्र लिखा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद के कांग्रेस विधायक बलवान सिंह दौलतपुरिया ने उपायुक्त डॉ. विवेक भारती को पत्र लिखकर हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय चौधरी भजनलाल तथा फतेहाबाद के प्रथम विधायक स्वर्गीय गोबिंद राय बत्रा की आदमकद प्रतिमाएं स्थापित करवाने की अपील की है। विधायक ने पत्र में कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी भजनलाल ने लंबे समय तक मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री के रूप में

बलवान सिंह दौलतपुरिया।

देश व प्रदेश की सेवा की। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, सडक़, बिजली, पेयजल तथा ग्रामीण आ धा र भू त सुविधाओं के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके विकास कार्य और जनहितकारी निर्णय आज भी लोगों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। विधायक ने कहा कि उनके विधानसभा क्षेत्र के गांव मोहम्मदपुर रोही सहित आमजन की लंबे समय से मांग रही है कि उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाया जाए।

### ये बोले दौलतपुरिया

पत्र में विधायक ने यह भी उल्लेख किया कि स्वर्गीय गोबिंद राय बत्रा को फतेहाबाद विधानसभा क्षेत्र का पहला विधायक बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। उन्होंने दो बार फतेहाबाद विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया और सामाजिक सेवा, जनकल्याण तथा शहर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके कार्य आज भी शहरवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। विधायक ने मांग की कि नगर परिषद के माध्यम से शहर के किसी प्रमुख सार्वजनिक स्थल अथवा चौक पर उनकी आदमकद प्रतिमा स्थापित करवाई जाए। विधायक ने कहा कि इन दोनों महान विभूतियों की प्रतिमाएं स्थापित होने से लोगों को प्रेरणादायक संदेश मिलेगा।

# 12 जुलाई को फतेहाबाद में होगा जैन संतों का भव्य चातुर्मास प्रवेश

■ सुबह 8:15 बजे निकलेगी मंगल यात्रा : सुरेंद्र मित्तल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

शहर में 12 जुलाई रविवार को जैन समाज के लिए आस्था और श्रद्धा का विशेष अवसर होगा। संधारा साधिका उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज एवं महासाध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज के सान्निध्य में, उत्तर भारत प्रवर्तिनी महासाध्वी श्री सुधा जी महाराज की आज्ञानुवर्तिनी आगम रसिका महासाध्वी श्री संतोष जी महाराज की सुशिष्या प्रवचन प्रभाविका साध्वी श्री समीक्षा जी महाराज तथा भावी साध्वी मल्लिका श्रीजी महाराज सहित ठाणा-2 का फतेहाबाद में चातुर्मास का मंगलमय प्रवेश होगा। चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर रविवार सुबह 8:15 बजे गीता मंदिर, मॉडल टाउन से भव्य मंगल यात्रा निकलेगी। यह यात्रा विभिन्न मार्गों से होते हुए एसएस जैन सभा, श्याम नगर, रतिया चुंगी स्थित सभा भवन पहुंचेगी, जहां चातुर्मास प्रवेश का धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। एसएस जैन सभा के प्रधान सुरेंद्र मित्तल ने बताया कि चातुर्मास के दौरान नियमित रूप से प्रवचन, धार्मिक अनुष्ठान एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है।

## नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन क्षमता निर्माण कार्यक्रम

# कार्यशाला में छात्राओं ने सीखी ब्राइडल मेकअप की बारीकियां

जन शिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में छात्राओं को प्रोत्साहित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सिरसा। प्रशिक्षण के दौरान डेमो के माध्यम से ब्राइडल मेकअप की बारीकियां बताते हुए। फोटो : हरिभूमि

नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन एवं जन शिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में जिला स्तरीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। जन शिक्षण संस्थान के निदेशक धर्मपाल ने कहा कि इस प्रकार के क्षमता निर्माण कार्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा उन्हें आत्मनिर्भर एवं कौशल संपन्न बनने के लिए प्रेरित करते हैं। प्राचार्या डॉ. पूनम मिगलानी ने व्यक्तित्व विकास तथा समायोजन विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि व्यक्तित्व विकास का अर्थ केवल बाहरी आकर्षण नहीं, बल्कि विचारों, व्यवहार और मूल्यों का समग्र विकास है। समायोजन जीवन जीने की वह कला है, जो व्यक्ति को परिस्थिति में संतुलित और सफल बनाती है। कार्यक्रम की अगली कड़ी में ममता मुंजाल ने प्रोफेशनल ब्यूटी गूरमिंग पर व्यवहारिक सत्र लगाया, जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों को ब्राइडल मेकअप की आधुनिक तकनीकों का व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने दुल्हन के मेकअप के विभिन्न चरणों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

### स्वरोजगार और उद्यमिता के लिए प्रेरित किया

प्रशिक्षण के दौरान उन्होने लाइव डेमो के माध्यम से ब्राइडल मेकअप की बारीकियों को सरल एवं प्रभावी ढंग से समझाया। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं ने अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए। संस्थान के निदेशक धर्मपाल ने उद्यमिता एवं वितीय साक्षरता विषय पर व्याख्यान देते हुए विद्यार्थियों को स्वरोजगार, उद्यमिता, वितीय प्रबंधन, बचत, निवेश एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उद्यमिता कौशल विकसित कर युवा अपने लिए रोजगार के अवसर सृजित कर सकते हैं तथा समाज के आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। पूर्व साक्षरता अधिकारी भूपेंद्र देव भी कार्यक्रम में मौजूद थे। प्राचार्या ने सभी अतिथियों, विशेषज्ञ, जन शिक्षण संस्थान के अधिकारियों, महाविद्यालय के शिक्षकों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन सामूहिक राष्ट्रगान के साथ किया गया। डॉ. बबीता व डॉ. वंदना रानी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026


# क्या कभी हो पाएगी एलियन से मुलाकात !

क्या एलियन कभी पृथ्वी पर आएंगे? क्या उनसे हमारी मुलाकात हो पाएगी? इस सवाल का फिलहाल कोई सीधा 'हां' या 'ना' में जवाब देना मुश्किल है। एलियंस का धरती पर आना भले ही अभी विज्ञान कथाओं की तरह लगता हो, लेकिन वैज्ञानिक प्रयासों से भविष्य में, असंभव सा लगने वाला कुछ भी संभव हो सकता है।

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

रात के समय जब हम आसमान में टिमटिमाते हुए तारों को देखते हैं, तो हमारे मन में एक सवाल बार-बार उठता है, 'क्या इस विशाल ब्रह्मांड में हम अकेले हैं?' या फिर किसी दूर के ग्रह पर हमारे जैसे ही या हमसे भी ज्यादा समझदार जीव रहते हैं? इन्हीं बाहरी दुनिया के जीवों को हम 'एलियन' या 'एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल' कहते हैं। गणितीय संभावनाओं को देखें तो ब्रह्मांड में कहीं न कहीं जीवन जरूर होना चाहिए। लेकिन अंतरिक्ष की असीम दूरियों को देखते हुए, उनका हमारे पास आना या हमारा उन तक पहुंचना बहुत ही कठिन काम है। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले कुछ दशकों में, जैसे-जैसे हमारी तकनीक और बेहतर होगी, हम शायद सौर मंडल के किसी चांद या बाहरी ग्रह पर जीवन के छोटे अंश (जैसे बैक्टीरिया) खोजने में सफल हो जाएंगे।

## क्यों बरकरार है संभावना

वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारे ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और हर आकाशगंगा में खरबों तारे और ग्रह हैं। इतनी बड़ी जगह में सिर्फ हमारी पृथ्वी पर ही जीवन हो, ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लगता है। इसलिए लगता है कि इस यूनिवर्स में कोई न कोई दूसरी दुनिया हो सकती है। खगोल वैज्ञानिक भी इस विषय पर यही सोचते हैं। इसीलिए वे सालों से एलियंस की खोज कर रहे हैं।

## क्या एलियन पृथ्वी पर आएंगे!

हालांकि आम लोगों का मानना है कि कभी न कभी एलियन पृथ्वी पर आए होंगे या आएंगे। लेकिन वैज्ञानिक इस सवाल का जवाब तर्क के आधार पर खोजते हैं। एलियन पृथ्वी पर क्यों आना चाहेंगे? इसके वे कई तर्क देते हैं-

**नए घर की खोज:** जैसे हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं, वैसे ही एलियन भी अपने रहने के लिए एक नए और सुरक्षित ग्रह की तलाश में पृथ्वी पर आ सकते हैं।

**संसाधनों की तलाश:** अगर उनके अपने ग्रह के प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, खनिज या ऊर्जा आदि खत्म हो गए हों, तो वे पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए यहां का रुख कर सकते हैं।

**जिज्ञासा और शोध:** हो सकता है कि एलियन भी हमारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों की तरह खोजी स्वभाव के हों। वे ब्रह्मांड के दूसरे जीवों यानी हम इंसानों के बारे में जानने और हमसे दोस्ती करने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

**तकनीकी श्रेष्ठता:** अगर कोई सभ्यता हमसे लाखों साल पुरानी है, तो उनके पास ऐसे स्पेसशिप हो सकते हैं जो रोशनी की रफ्तार से

भी तेज चल सकें। ऐसी तकनीक होने पर उनके लिए पृथ्वी तक आना बहुत आसान होगा।

इसके विपरीत एलियन का आना क्यों मुश्किल है, इसके भी कुछ तर्क देते हैं-

**अत्यधिक दूरी:** ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमारे सबसे करीबी तारे प्रॉक्सिमा सेंचुरी तक पहुंचने में भी आज की तकनीक से हजारों साल लग जाएंगे। एलियंस के लिए भी इतनी लंबी दूरी तय करना एक बड़ी चुनौती होगी।

**समय का चक्र:** हो सकता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में एलियन रहे हों, लेकिन वे इंसानों के पैदा होने से करोड़ों साल पहले ही खत्म हो चुके हों, या फिर वे तब आएंगे, जब इंसान धरती से गायब हो चुके होंगे।

**संवाद की कमी:** हमारी भाषा, रेडियो सिग्नल और सोचने का तरीका उनसे बिल्कुल अलग हो सकता है। मुमकिन है कि वे हमारे सिग्नलों को समझ ही न पा रहे हों।

## वैज्ञानिक शोध और प्रयास

वैज्ञानिकों ने एलियंस को ढूंढ़ने और उनसे संपर्क करने के लिए कई प्रयास किए हैं।

**सेटी प्रोजेक्ट:** सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस, दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है, जो अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी सिग्नलों पर नजर रखता है। वैज्ञानिक बड़े-बड़े रेडियो टेलीस्कोप का इस्तेमाल करके आसमान से आने वाली आवाजों और तरंगों को सुनते हैं, ताकि एलियंस का कोई संदेश पकड़ा जा सके।

**वोयाजर के गोल्डन रिकॉर्ड्स:** साल 1977 में नासा ने अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट भेजे थे, जिनका नाम 'वोयाजर 1' और 'वोयाजर 2' है। इन स्पेसशिप में एक तांबे की बनी सीडी जैसी 'गोल्डन डिस्क' रखी गई है। इस डिस्क में पृथ्वी की आवाजें, संगीत, 55 भाषाओं में नमस्कार और हमारे ग्रह का नक्शा दर्ज है, ताकि अगर कभी यह किसी एलियन को मिले, तो वे हमारे बारे में जान सकें।

**यूएफओ और यूएपी की जांच:** दुनिया भर में कई बार आसमान में उड़ने वाली अजीबो-गरीब चीजों जैसे उड़न तश्तरी को देखने का दावा किया गया है। अब अमेरिकी सरकार और नासा जैसी एजेंसियां इन्हें 'यूएपी' (अनआइडेंटिफाइड एनोमैलुअस फैनोमेना) कहकर इन पर आधिकारिक रिसर्च कर रही हैं, ताकि यह साफ हो सके कि ये एलियंस के यान हैं या कोई प्राकृतिक घटना।

बहरहाल, भविष्य में कभी दूसरे ग्रह के वासियों एलियंस से पृथ्वीवासियों की कभी मुलाकात हो पाएगी या नहीं यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन दुनिया भर के वैज्ञानिक इस कोशिश में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। *

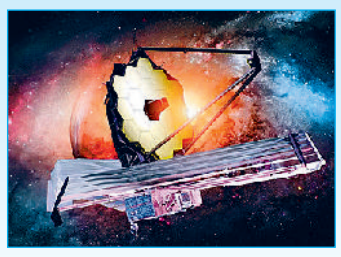

### केपलर-जेम्स वेब टेलीस्कोप

नासा के इन आधुनिक टेलीस्कोपों का काम अंतरिक्ष में 'एक्सोप्लैनेट्स' यानी हमारे सौर मंडल से बाहर के ग्रह को खोजना है। वैज्ञानिकों ने अब तक हजारों ऐसे ग्रह खोजे हैं, जो 'गोल्डीलॉक्स जोन' में हैं। इसका मतलब है कि ये ग्रह अपने तारे से न तो बहुत ज्यादा गर्म हैं और न ही बहुत ज्यादा ठंडे, जहां पृथ्वी की तरह पानी और जीवन मौजूद हो सकता है। इसमें जीवन की संभावना भी हो सकती है।

### मार्स मिशन

हमारे सबसे नजदीकी ग्रह मंगल पर पानी और जीवन के निशान खोजने के लिए भारत का 'मंगलयान', नासा के 'परसवेरेंस' रोवर जैसे कई मिशन भेजे गए हैं। इनके जरिए वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों के जीवाश्म ढूंढ़ रहे हैं, जो अंतरिक्ष वासी एलियन या जीवन का पहला ठोस सबूत हो सकते हैं।

# चिंताजनक है लगातार बढ़ता अंतरिक्ष में वेस्ट मैटर

जिस तरह से हम सबने अपनी पृथ्वी पर प्रदूषक वस्तुओं और कूड़े-कचरे का अंबार लगा रखा है, कुछ ऐसा ही हाल अंतरिक्ष का भी होता जा रहा है। स्पेस में स्पेसक्राफ्ट, एस्ट्रोनॉट्स और सैटेलाइट्स का वेस्ट मैटर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

स्पेस इश्यू
अंजू जैन

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें टिमटिमाते तारे, चंद्रमा और कभी-कभी गुजरते हुए सैटेलाइट्स (उपग्रह) दिखाई देते हैं। यह नजारा बेहद जादुई लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे इस खूबसूरत अंतरिक्ष में एक बहुत बड़ी मुसीबत धीरे-धीरे पैर पसार रही है? इस मुसीबत का नाम है-'अंतरिक्ष का कचरा' या 'स्पेस डेब्री'।

**क्या है स्पेस डेब्री:** जैसे हम अपनी पृथ्वी पर प्लास्टिक, रैपर्स और खराब सामान फेंककर इसे गंदा कर रहे हैं, ठीक वैसे ही इंसानों ने अंतरिक्ष को भी कबाड़खाना बनाना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष कचरा या स्पेस जंक उन सभी मानव-निर्मित बेकार चीजों को कहते हैं, जो अब किसी काम की नहीं रहीं और पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में चक्कर काट रही हैं। इस कचरे में बेकार हो चुके पुराने सैटेलाइट्स, रॉकेट्स के छूटे हुए टुकड़े, अंतरिक्ष यात्रियों के हाथ से छूटे हुए औजार (जैसे स्क्रू-ड्राइवर, ग्लव्स) और सैटेलाइट्स के आपस में टकराने से बने करोड़ों छोटे-छोटे टुकड़े शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, इस समय अंतरिक्ष में लाखों छोटे-बड़े टुकड़े तैर रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की घंटी हैं।

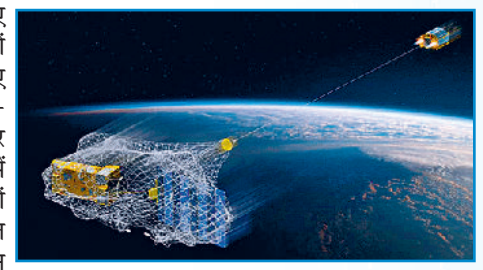

**स्पेस डेब्री में शामिल चीजें:** स्पेस डेब्री में बहुत कुछ हो सकता है। जैसे-जब किसी उपग्रह का जीवनकाल खत्म हो जाता है या उसका ईंधन समाप्त हो जाता है, तो वह वहीं अंतरिक्ष में निष्क्रिय होकर घूमने लगता है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने के बाद रॉकेट के निचले और ऊपरी हिस्से अलग हो जाते हैं। ये हिस्से अंतरिक्ष में ही तैरते रह जाते हैं। जब दो सैटेलाइट्स आपस में टकराते हैं, तो उनके परखच्चे उड़ जाते हैं। एक टक्कर से हजारों नए छोटे-छोटे तीखे टुकड़े बन जाते हैं।

कुछ देश अपनी मिसाइल क्षमता को जांचने के लिए अंतरिक्ष में अपने ही पुराने सैटेलाइट को मिसाइल से उड़ा देते हैं। इससे पल भर में बेशुमार कचरा फैल जाता है।

**स्पेस वेस्ट से संकट:** अब आप सोच रहे होंगे कि अंतरिक्ष तो इतना विशाल है, फिर वहां थोड़े से कबाड़ से क्या फर्क पड़ता है? अंतरिक्ष हमारा भविष्य है। अगर आज हमने इसकी सफाई पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी के लिए ब्रह्मांड के रहस्य जानने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। इसके कई खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष में ये टुकड़े धीरे-धीरे नहीं तैरते। इनकी रफ्तार बंदूक की गोली से भी 10 से 15 गुना तेज होती है, लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा। इतनी रफ्तार में एक छोटा-सा पेंट का टुकड़ा या पेंच भी किसी सैटेलाइट से टकराए, तो उसे पूरी तरह तबाह कर सकता है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में हमेशा हमारे वैज्ञानिक रहते हैं। यदि कोई बड़ा टुकड़ा स्पेस स्टेशन से टकरा जाए, तो वहां रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की जान पर बन आ सकती है। उन्हें कई बार खुद को बचाने के लिए आपातकालीन कैप्सूल में छिपना पड़ता है।

हम मोबाइल के जरिए जो बात करते हैं, जीपीएस से रास्ता देखते हैं, टीवी देखते हैं और मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं, वे सब अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स की वजह से संभव होता है। अगर कचरे की वजह से ये सैटेलाइट्स नष्ट हो गए, तो हमारी पृथ्वी की आधुनिक लाइफलाइन एकदम रुक-सी जाएगी। अगर अंतरिक्ष में कचरा बहुत ज्यादा बढ़ गया, तो वे आपस में टकराकर और अधिक कचरा बनाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि पृथ्वी के चारों ओर कचरे की ऐसी घनी दीवार बन जाएगी कि इंसान कभी नया रॉकेट या सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज ही नहीं पाएगा। हम हमेशा के लिए पृथ्वी पर कैद हो जाएंगे।

**निदान और समाधान:** अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की इस समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर की स्पेस एजेंसियां जैसे भारत की इसरो, अमेरिका की नासा इस मलबे को साफ करने के लिए बेहद अनोखे तरीकों पर काम कर रही हैं। वैज्ञानिक ऐसे विशेष सैटेलाइट बना रहे हैं, जो अंतरिक्ष में जाकर बड़े मलबे पर जाल फेंकेंगे या हारपून (भाला) मारकर उसे पकड़ेंगे और खींचकर पृथ्वी के वायुमंडल की तरफ ले आएंगे।

कुछ जापानी कंपनियां ऐसे सैटेलाइट्स का परीक्षण कर रही हैं, जिनमें बहुत शक्तिशाली चुंबक लगे होंगे। ये चुंबक लोहे और धातु के मलबे को अपनी ओर आकर्षित करके चिपका लेंगे। इस तरह कई और तकनीकें अपनाई जा रही हैं। संभव है इसका स्थायी समाधान खोज लिया जाएगा। *

गजल
हबीब कैफी

## चला गया कोई

उम्र अपनी बढ़ा गया कोई
नाम लेते ही आ गया कोई
मैंने थामा था हाथ कांटों में
फूल पाकर छुड़ा गया कोई
उसके सारे निशान जिंदा हैं
कैसे कह दूं चला गया कोई
इक तने पर लिखे थे बरसों से
नाम दोनों मिटा गया कोई
नींद यूं ही नहीं हुई गायब
तेरे किस्से सुना गया कोई
सिर्फ इक बात मैंने पूछी थी
बातें क्या-क्या सुना गया कोई
जिक्र जब भी वफा का आया है
सर झुका कर चला गया कोई

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

# महंगाई से मुलाकात

चाहने को हम भी बहुत कुछ चाहते हैं। हमारी पहली चाहत तो यह ही है कि अपने पास अकूत वैध संपत्ति हो। वैध इसलिए, क्योंकि बुल्डोजर से सबको डर लगता है। बड़े-बड़े मुर्गे हलाल हो गए, फिर भला इस पिद्दी के शोरबे की क्या ही औकात है? हमारी दूसरी चाहत है कि महंगाई नाम की चीज को अपने देश से धक्के मार कर बाहर निकाल देना चाहिए। अंतर्मन में कुछ ऐसी भी चाहतें हैं, जिन्हें सार्वजनिक कर दें तो जूते पड़ने लगेंगे। हमारे एक मित्र ने एक महिला को सिर्फ 'आइ लव यू' कहा था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, अस्पताल से लौटकर आया है और प्रत्येक महिला को बुआ-दीदी से नीचे नहीं बोलता है।

इंसान कामनाओं का कोष है। मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। सबको फेसबुक-एक्स आदि के दरिया में डालकर अपनी भड़ास निकालने से अच्छा है कि भाग्यवादी बन जाओ। 'जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए।' हम भी रह ही रहे हैं। घोर महंगाई की चपत खाकर भी हंस रहे हैं। यूं किसी के चाहने या न चाहने से क्या होता है? भला मैं भी कहां चाहता था, फिर भी आज महंगाई से मेरी मुलाकात हो ही गई। वैसे यह कोई नई बात नहीं है। पहले कभी-कभार भेंट होती थी। इन दिनों वह मुझसे रोज ही किसी-न-किसी बहाने मेरे घर पर मिलने आ जाया करती है। जब मैं घर से बाहर रहता हूं तो वह वहां पर भी मुझसे टकरा जाती है। बाजार जाऊं तो वहां भी मिल जाती है। सड़क पर चल रहा होता हूं, तब भी वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। पत्नी कहती है, 'यह मुई मेरी सौत है। इसकी निगाह तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारी जेब पर भी रहती है।'

मैं अकसर यह महसूस करता हूं कि मेरी जेब में रखा हुआ पर्स भी जरूरत से ज्यादा दुबला हो चुका है। महंगाई डायन के प्रकोप के चलते 'चंद क्वॉइन' ही शेष बचे हुए हैं। गनीमत है कि वह पूरी तरह खाली नहीं हुआ है। शायद इसी दुबले पर्स पर महंगाई डाका डालने पर उतारू है। जिसके पास धन नहीं है, उसको न चोरी का डर सताता है और न रहजनी का। उसे एकमात्र डर सताता है तो महंगाई का।

मेरा प्रतिदिन महंगाई से इसी तरह मिलना होता रहा तो एक दिन इस गरीब की जान ही निकल जाएगी। आप जानते हैं कि गरीब की जान उसकी हलक में अटकी होती है। यह उस चिड़िया की तरह होती है, जिसे जब तक दाना-पानी मिलता रहता है, चहकती रहती है, जिस दिन मिलना बंद हो गया, फुर्र से उड़ जाती है। लोग यूं ही प्राण को पखेरू नहीं कहते हैं।

मैं इस नामाकूल महंगाई से कितना भी बचना चाहता हूं, लेकिन वह है कि हाथ धोकर मेरे गले पड़ती जा रही है। आज महंगाई फिर एक बार मुझसे मिलने आई है। वह आवश्यकता से अधिक मोटी दिख रही है। पिछली बार जब उससे मिलना हुआ था, तब भी वह मोटी ही थी, लेकिन इस बार उसके शरीर की चर्बी पर एक और परत चढ़ चुकी है। वैसे भी जो प्रतिदिन दूसरों की जेब पर डाका डालता हो, उसका मोटा हो जाना अचरज की बात नहीं है। मैं अपने आस-पास के ऐसे तमाम लोगों को जानता हूं, जो दूसरों को लूटते रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। महंगाई भी पुष्ट हो रही है। वह मुझसे कहने लग गई, 'तुम मेरे नाम का रोना रोते रहते हो, मैंने सोचा आज एक बार और मिल लेती हूं! कहो, कैसे मिजाज हैं?' मैंने कहा, 'मिजाज की छोड़ो। तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। तुम जिस अनुपात में मोटी होती चली जा रही हो, हम उसी अनुपात में दुबले हो रहे हैं। उधर तुम्हारी खुराक बढ़ती जा रही है, इधर हम अपने को किसी दिहाड़ी मजदूर की पगार जैसा बेबस पाते हैं।'

महंगाई जैसे आज विश्व हास्य दिवस मनाने के मूड में थी। वह पहले खूब हंसी, फिर मुझे छेड़ती हुई बोली, 'देख रही हूं। तुम्हारे पांवों में बेबसी के घुंघरू बंधे हुए है, फिर भी तुम ठुमक रहे हो। तुम जैसे बकरे को कहां पता है कि कल मैं तुमको किस भारी-भरकम रूप में मिलने वाली हूं!' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

# विडंबनाओं पर कटाक्ष

आज के बहुरूपिए समय में तमाम तरह की विडंबनाओं और विसंगतियों के संग जीने के लिए हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि किसी भी प्रकार के विद्रूप में असहज महसूस नहीं करते हैं। लेकिन एक व्यंग्यकार की सजग दृष्टि न केवल जीवन और व्यवस्था में धंसे विद्रूप को इंगित करती है, उस पर कटाक्ष भी करती है। सुपरिचित व्यंग्यकार मुरली मनोहर श्रीवास्तव के ऐसे ही चुने हुए 65 व्यंग्यों का संग्रह 'डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग' हाल में छपकर आया है। इनमें कहीं वे नेशनल कैरेक्टर से लेकर, आटा से ज्यादा डाटा की चिंता करते नजर आते हैं, तो

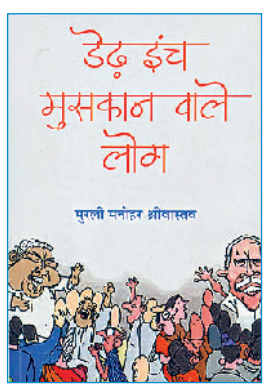


कहीं चुटकी लेते हुए मीडिया का महिमा मंडन करते दिखते हैं। 'ऑफिस रस' शीर्षक व्यंग्य में वह लिखते हैं, 'जिसे एक बार ऑफिस रस की लत लग गई, वह इसकी प्रॉपर डोज के बिना रह ही नहीं पाता। वह कहीं भी रहे, किसी भी हाल में पड़ा हो, इस रस की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।' हर खास-ओ-आम की जिंदगी में आज की तारीख में इंटरनेट डाटा का क्या महत्व हो चुका है, इस बारे में व्यंग्यकार की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। 'आटा और डाटा' शीर्षक व्यंग्य में वह कहते हैं, 'कई बार लगता है कि आटा न भी मिले तो चलेगा पर डाटा खत्म हो गया तो जीकर क्या करेंगे? लड़ाई यह है कि आटा जन-जन तक पहुंचा कि डाटा?' *

**पुस्तक:** डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग (व्यंग्य संग्रह), **लेखक:** मुरली मनोहर श्रीवास्तव, **मूल्य:** 400 रुपए, **प्रकाशक:** विद्या विहार, नई दिल्ली

हरिभूमि रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026



सीजनल टूरिज्म / समीर चौधरी

हर नेचर लवर टूरिस्ट, मानसून में भीगी हरी-भरी पहाड़ी वादियों को करीब से निहारना चाहता है। हालांकि आमतौर पर इस सीजन को ट्रैकिंग के लिए सुटेबल नहीं माना जाता है। लेकिन कुछ ऑफबीट-सुरक्षित हिमालयी ट्रैकिंग स्पॉट्स पर जाकर आप अपनी इस चाहत को पूरा कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ बेमिसाल ट्रैकिंग स्पॉट्स पर एक नजर।

# मानसून में करिए फुल एंज्वॉय ये हिमालयन ट्रैकिंग स्पॉट्स

## अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट परांग ला ट्रैक, हिमाचल प्रदेश

परांग ला ट्रैक (18,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित) अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट माना जाता है, क्योंकि लद्दाख व स्पीति को जोड़ने वाला इसका पथरीला, तीखी ढलान वाला रूट थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप इस ट्रैक पर शुरुआत लेह के करजोक गांव से या स्पीति के चिचम/किब्बर गांव से कर सकते हैं। कठिन रास्तों के बावजूद आपको जादुई नजारे देखने को मिलेंगे। इस दौरान आप खिले हुए जंगली फूल, गहरी नीली त्सो मोरिरी झील के अलावा किआंग या तिब्बती जंगली गधों के झुंडों को भी कूदते-दौड़ते हुए देख सकते हैं। इसे विजिट करने का सबसे अच्छा समय जुलाई के मध्य से सितंबर की शुरुआत तक होता है। *

## मोहक नजारा दिखाए मरखा घाटी, लद्दाख

जुलाई और सितंबर के मध्य में मरखा घाटी (17,060 फीट की ऊंचाई पर स्थित) की दूधिया सफेद नदियां, सुंदर लैंडस्केप और विशाल पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हरी-भरी वादियां मन मोह लेती हैं। यहां से कांग यत्से पहाड़ का दिलकश नजारा भी दिखता है। यह ट्रैक लेह से आरंभ होता है और फिर जब आप ऊपर की तरफ बढ़ते हैं तो हेमिस नेशनल पार्क, सुदूर गांवों और आध्यात्मिक ताचा मठ से होते हुए यह सफर यादगार बनता चला जाता है। यहां ट्रैकिंग करते हुए आपको हिमालयन ब्लू शीप, हिमालयन ग्रिफ्फोन, स्नो लेपर्ड और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दीदार करने का अवसर भी मिलता है। *

## हिडन डायमंड दरमा घाटी ट्रैक, उत्तराखंड

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित दरमा घाटी ट्रैक (14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित) एक छुपा हुआ हीरा कहा जाता है, जो आपको आकर्षक गांवों, घने जंगलों, रोलिंग घास के मैदानों और ग्लेशियर से पोषित धाराओं से रूबरू कराता है। इन सबकी पृष्ठभूमि में होती हैं हिमालय की विशाल ऊंची चोटियां। जब मानसूनी बारिश इस लैंडस्केप को भिगो देती है, तो यह वादी हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध से भर जाती है। रास्ते में आपको बर्फ से ढंके पहाड़ मिलेंगे। आप इस दौरान स्थानीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति और मेजबानी का भी आनंद ले सकते हैं। जून से सितंबर इस ट्रैक पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय है। *

## हसीन वादियों से समृद्ध पिन घाटी, हिमाचल प्रदेश

मानसून में ट्रैकिंग के लिए एक अन्य बेहतरीन ट्रैकिंग स्पॉट पिन घाटी (15,780 फीट की ऊंचाई पर स्थित) है। यहां हरे-भरे जंगलों, विशाल घास के मैदानों, पथरीले रास्तों, बर्फ से ढंके मैदानों और ठंडे रेगिस्तानों का फोटो-फ्रेंडली नजारा देखने को मिलता है। यह ट्रैकिंग मुध नामक गांव से आरंभ होती है। पूरी तरह बर्फ सं ढंकी झोपड़ियों की पृष्ठभूमि में मटर और जौ के खेत और तेज हवाओं के साथ झूमते पेड़-पौधे आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रैकिंग के दौरान आप प्राकृतिक गर्म पानी के चश्मों के लिए विख्यात खीरगंगा पर रुक सकते हैं। पिन नेशनल पार्क के साथ गेचांग, का और थंगो जैसे स्थान देखना न भूलें। यहां जाने के लिए सबसे अच्छा समय जुलाई से मध्य सितंबर तक माना जाता है। *

## वन्य-जीवन से दीदार कराता तोसामैदान ट्रैक, कश्मीर

इस मौसम में ट्रैकिंग की सोच रहे हैं तो तोसामैदान ट्रैक (12,460 फीट की ऊंचाई पर स्थित) आपकी बकट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। कश्मीर के गुलमर्ग में स्थित यह ट्रैक विशाल पीर पंजाल रेंज, अल्पाइन घास के मैदान, शंकुधारी और चीड़ के जंगलों, चमचमाती झीलों और बर्फ से ढंके पहाड़ों से होकर गुजरता है। इस मार्ग पर ट्रैकिंग के दौरान विभिन्न हिमालयी वन्य जीवों जैसे कस्तूरी हिरण, लेपर्ड और विभिन्न प्रजातियों की मुर्गियां आदि को देखने का मौका आपको मिलेगा। यहां ट्रैकिंग करने का सबसे अच्छा समय जुलाई से सितंबर तक का होता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / नरेंद्र कुमार

किसी भी प्रोफेशन में ग्रो करने के लिए लगातार सीखना और खुद को बेहतर बनाने की क्षमता का होना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आपको अपनी कमियां पता हों। कमियां पता लगाने के लिए बॉस ही नहीं कुलीग्स, सीनियर्स का फीडबैक भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

# करियर ग्रोथ के लिए इंपॉर्टेंट है फीडबैक

आज के दौर में प्रोफेशनल दुनिया में कामयाबी के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं है। कंपनियां अब अपने स्टाफ में ऐसे लोगों को चाहती हैं, जो हर समय सीखने को तैयार रहें। जो अपनी कमियों को पहचान सकें और किसी के द्वारा बताए जाने पर उसमें जरूरी सुधार करें। यही कारण है कि फीडबैक आज करियर ग्रोथ का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वास्तव में फीडबैक एक ऐसा आईना है, जिसमें हम अपनी प्रोफेशनल इमेज बहुत अच्छी तरह से देख सकते हैं। जो लोग इस आईने से डरते नहीं, वे लोग सचमुच इससे बहुत कुछ सीखते हैं।

**क्या है फीडबैकः** फीडबैक का मतलब केवल आपकी गलती बताया जाना नहीं होता। यह आपके प्रोफेशनल बिहेवियर, काम की प्रस्तुति और क्षमता का किया गया मूल्यांकन होता है, जिसमें सुझाव भी शामिल होता है। इसे अगर आप सकारात्मक तरीके से लेते हैं तो यह आपको बेहतर बनाने में मदद करता है और अगर आप इसे अपनी व्यक्तिगत अलोचना के तौर पर लेते हैं, तो इससे आपको नुकसान हो सकता है।

**जरूरी है फीडबैकः** डेढ़-दो दशक पहले नौकरियां आज के मुकाबले अपेक्षाकृत स्थिर हुआ करती थीं। लोग बीस-बीस, तीस-तीस साल तक एक ही कंपनी में गुजार देते थे। आज के समय में कंपनियां जरूरी नहीं है कि अगर किसी को अपने यहां रख लें तो उसे सालों-साल ढोती ही रहें। हां, आज भी दस पर्सेंट ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो कई साल एक ही कंपनी में गुजार देते हैं। सवाल है, ऐसे थोड़े लोगों में क्या खूबी होती है कि आज भी कंपनियां इन थोड़े से लोगों को अपने साथ लंबे समय तक बनाए रखना चाहती हैं? दरअसल, आज कंपनियां उन्हीं कर्मचारियों को लंबे समय तक अपने साथ बनाए रखने में तरजीह देती हैं, जो अपनी प्रोफेशनल स्किल को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश में रहते हैं और जब भी उन्हें कुछ सीखने का मौका मिलता है, जल्द से जल्द सीखने की कोशिश करते हैं। जो अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए तैयार रहते हैं, समय और परिस्थितियों के मुताबिक काम के तौर-तरीके में जरूरी बदलाव करते हैं और टीम के साथ बेहतर तालमेल बनाए रखते हैं। वास्तव में ये क्वालिटीज फीडबैक के बेहतर उपयोग के नतीजे के रूप में सामने आती हैं।

**फीडबैक बदलता है दिशाः** कई बार लोगों को खुद अपनी कमजोरियों का अंदाजा नहीं हो पाता। ऐसे में अगर आप स्वयं को मिले फीडबैक के बाद अपने काम की गुणवत्ता के बारे में जरूरी समझकर, अपनी कमी को सुधारने की कोशिश करते हैं, तो यह कोशिश आपके लिए न केवल प्रमोशन बल्कि आगे चलकर टीम लीड करने की राह भी खोलेगी। यहां सीनियर्स को फीडबैक देने के तरीके के बारे में भी समझना जरूरी है। अकसर सीनियर्स गलत तरीके से या गुस्से में फीडबैक देते हैं। मसलन, किसी के काम में उन्हें कोई कमी नजर आती है, तो वह छूटते ही कह देते हैं, 'तुम हमेशा ही गलत काम करते हो।' इससे आपका कुलीग असहज हो जाता है। होना यह चाहिए कि किसी कुलीग या जूनियर को फीडबैक दें तो उसमें केवल कमी निकालने की बजाय उसके काम को और बेहतर बनाने के सुझाव पर फोकस होना चाहिए।

**फीडबैक लेने का सही तरीकाः** फीडबैक देने के सही तरीके की तरह ही इसे लेने का तरीका भी सही होना चाहिए। सही तरीका यह है कि हम अपने काम में खामी निकालने वाले व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनें, उसे बीच में कतई न टोकें। आप अपने लिए दिए गए महत्वपूर्ण सुझाव को लिख लें, ताकि बाद में जब अकेले में हों, तो उसे और बेहतर तरीके से समझ सकें। कोई भी फीडबैक मिलने पर आप सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन यह सवाल रिएक्शन या ऑब्जेक्शन न लगे बल्कि आपको दी जा रही सलाह को और स्पष्ट किए जाने के संबंध में होना चाहिए या फिर बेहतर करने की इच्छा से संबंधित होना चाहिए। *

पुराने दौर से लेकर आज के समय में भी दुनिया भर के देशों में जन्मदिन के उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाया जाता रहा है। कुछ जगहों की परंपराएं तो बहुत ही अजब-अनोखी हैं। इनमें से कुछ दिलचस्प परंपराओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

# बर्थ-डे सेलिब्रेशन के अजब-अनोखे तरीके

बच्चों का 'किंडरफेस्ट' सेलिब्रेशन, जर्मनी

जन्मदिन पर 'पिन्याटा' फोड़ने की प्रथा, मैक्सिको

रोचक / नेहा जैन

बर्थ-डे का नाम सुनते ही सबसे पहले आपकी कल्पना में चारों तरफ सजे हुए रंग-बिरंगे गुब्बारे और मेज पर रखा सजा हुआ केक आता होगा। केक काटना आज जन्मदिन के उत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। लेकिन केक के आविष्कार के पूर्व या उसके बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोग किस तरह बर्थ-डे सेलिब्रेट करते थे, यह जानना बहुत दिलचस्प है।

**प्राचीन यूनान (ग्रीस):** प्राचीन काल में यूनान देश के लोग जन्मदिन के अवसर पर चंद्रमा की देवी आर्टेमिस के सम्मान में गोल आकार का शहद वाला केक बनाते थे, जो चांद का प्रतीक माना जाता था। केक पर जलती मोमबत्तियां चांद की चांदनी की तरह चमकती थीं। उनका मानना था कि मोमबत्तियों का धुआं उनकी प्रार्थनाओं को देवताओं तक पहुंचाता है।

**रोमन सभ्यता:** प्राचीन रोम में भी जन्मदिन के अवसर पर आटे, मेवों और शहद से बने केक या मीठी ब्रेड खिलाने का चलन था।

**प्राचीन मिस्र (इजिप्ट):** प्राचीन मिस्र के फराओ (राजाओं) के राज्याभिषेक के दिन को उनका 'जन्मदिन' माना जाता था, जिसे भव्य उत्सव के रूप में मनाते थे। इस अवसर पर विशेष तरह के कई पकवान बनाए जाते थे।

**जर्मनी का किंडरफेस्ट:** 18वीं शताब्दी में जर्मनी में बच्चों के जन्मदिन पर विशेष उत्सव मनाया जाता था, जिसे 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। यहां बच्चे की उम्र के अनुसार केक पर मोमबत्तियां लगाई जाती थीं और एक अतिरिक्त मोमबत्ती गुड लक के लिए रखी जाती थी।

**ऐसे भी करते हैं बर्थ-डे सेलिब्रेटः** आज भी दुनिया के अलग-अलग देशों में जन्मदिन को अनूठे तरीकों से मनाते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

**चीनः** चीन में बच्चे के बर्थ-डे पर केक की जगह लंबी उम्र के प्रतीक के रूप में 'लॉन्जिविटी नूडल्स' खाए जाते हैं। मान्यता है कि नूडल्स जितने लंबे होंगे, उम्र उतनी ही लंबी होगी। हालांकि अब वहां केक के साथ भी बर्थ-डे सेलिब्रेशन लोकप्रिय है।

**ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडः** इन दोनों देशों में बर्थ-डे के अवसर पर फलों और क्रीम से सजी 'पावलोवा' केक बनाया और खाया जाता है।

**जापानः** यहां 3, 5 और 7 साल का होने पर बच्चों का जन्मदिन विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं, जहां वे पारंपरिक किमोनो पहनकर मंदिर जाते हैं। यह परंपरा शिकी-गो-सान कहलाती है।

**मैक्सिकोः** यहां जन्मदिन की पार्टियों में 'पिन्याटा' फोड़ने का रिवाज है। यह कागज से बना बड़ा-सा खिलौना या गुब्बारा होता है। इसे कैंडी और छोटे-छोटे खिलौनों से भरा जाता है, फिर ऊंचाई पर लटका दिया जाता है। फोड़ने पर इससे निकलने वाले उपहारों को बच्चे बड़े उत्साह से लूटते हैं।

**दक्षिण कोरियाः** यहां जन्मदिन की सुबह 'मियेओक-गुक' (सीवीड सूप) पीना अनिवार्य माना जाता है। यह मां के प्रति सम्मान जताने का तरीका है, क्योंकि प्रसव के बाद मांएं इसे खाती हैं।

**डेनमार्कः** डेनमार्क में यदि किसी के घर के बाहर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा हो तो इसका मतलब है कि घर में किसी का जन्मदिन है।

**कनाडाः** कनाडा में कुछ जगहों पर बर्थ-डे पर उस व्यक्ति की 'नोज ग्रीसिंग' की परंपरा है। माना जाता है कि नाक पर मक्खन लगाने से आने वाले साल में उसकी मुसीबतें फिसल कर दूर चली जाएंगी। कनाडा और अमेरिका में लड़कियों के 16वें जन्मदिन को बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे स्वीट सिक्सटीन फेस्टिवल के रूप में मनाते हैं।

**लैटिन अमेरिकाः** लैटिन अमेरिकी देशों में लड़कियों के 15वें जन्मदिन को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है, जो उनके बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ने का प्रतीक होता है। *

## भारत में बर्थ-डे सेलिब्रेशन

अपने देश भारत में जन्मदिन पर मंदिर जाने, अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने और नए कपड़े पहनने आदि का रिवाज है। हालांकि महानगरों में आजकल बर्थ-डे पर केक काटना पॉपुलर हो गया है। लेकिन भारत में पारंपरिक रूप से इस अवसर पर खीर, मिठाई या हलवा खिलाया जाता है।

## अनूठे बर्थ-डे केक्स

बर्थ-डे केक से जुड़ी कुछ बातें बहुत ही इंट्रेस्टिंग हैं। **भारत का सबसे भारी बर्थ-डे केकः** भारत का सबसे भारी और लंबा बर्थडे केक 5.7 टन का था। यह विशाल केक जनवरी 2020 में भारतीय अभिनेता 'रॉकिंग स्टार यश' के जन्मदिन के अवसर पर बेंगलुरू, कर्नाटक में बनाया गया था। इसे बनाने में 22,500 अंडे, 1,800 किलोग्राम मैदा और 1,150 किलोग्राम चीनी का इस्तेमाल किया गया था। इस केक को 'श्री राम भवन स्वीट्स एंड बेकरी' के 20 कारीगरों ने 96 घंटों में तैयार किया था।

**दुनिया का सबसे महंगा केकः** दुनिया का सबसे महंगा केक ब्रिटिश डिजाइनर डेबी विंघम द्वारा वर्ष 2015 में बनाया गया था, जिसकी कीमत लगभग 75 मिलियन डॉलर (करीब 625 करोड़ रुपए) थी। यह केक एक फैशन रनवे की थीम पर आधारित था, जिसमें 4,000 से अधिक असली हीरे और कीमती रत्न जड़े गए थे।

**दुनिया का सबसे बड़ा बर्थ-डे केकः** यह रिकॉर्ड सन् 1990 में अमेरिका के अलबामा राज्य के फोर्ट पायने शहर के 100वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बने केक के नाम है।

सिने-ट्रेंड / गौरव द्विवेदी

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल महान अभिनेताओं का दौर नहीं था, बल्कि महान लेखकों का भी दौर था। 1950, 60 और 70 के दशक में बॉलीवुड की सबसे बड़ी ताकत उसके लेखक हुआ करते थे। उस दौरान फिल्मों की नींव प्रायः साहित्य पर रखी जाती थी और पटकथा लेखक फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के केंद्र में हुआ करते थे। यही कारण है कि उस दौर की अनेक फिल्में आज भी प्रासंगिक लगती हैं, जबकि तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत आज की कई फिल्में कुछ वर्षों में ही भुला दी जाती हैं।

**साहित्य-सिनेमा चलते थे साथ-साथः** हिंदी फिल्मों के उस स्वर्ण युग के पीछे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन और भारतीय साहित्यिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। उर्दू और हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक लेखक फिल्म उद्योग में आए। इनमें साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, इस्मत चुगताई, कृशन चंदर, अली सरदार जाफरी, राही मासूम रजा, गुलशन नंदा, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी और शैलेंद्र के नाम प्रमुख थे। इन लेखकों ने फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज बना दिया।

**साहित्य का विस्तार होती थीं फिल्मी पटकथाः** उस दौर में पटकथा लेखन सिर्फ घटनाओं का क्रम नहीं था, बल्कि साहित्य का स्वाभाविक विस्तार हुआ करता था। ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'आवारा', 'श्री 420', 'जागते रहो' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों में सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया। राजेंद्र सिंह बेदी ने 'देवदास', 'मधुमती' और 'अनुपमा' जैसी फिल्मों की पटकथाओं में साहित्यिक गहराई जोड़ी। राही मासूम रजा ने 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'गोलमाल' और बाद में 'महाभारत' (सीरियल) से अपनी पहचान बनाई।

**साहित्य से निकली कालजयी फिल्मेंः** यह वह दौर था, जब फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर 'तीसरी कसम' बनी, आर. के. नारायण के उपन्यास पर 'गाइड' बनी, बिमल मित्र के उपन्यास पर 'साहिब बीवी और गुलाम' बनी।

# लेखकों की मेज से उपजा हिंदी सिनेमा का स्वर्णयुग

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल सितारों का नहीं, बल्कि लेखकों का भी स्वर्णिम समय था। साहित्य से निकली कहानियों और सशक्त पटकथाओं ने उस दौर की फिल्मों को कालजयी बनाया। आज जब बॉलीवुड सशक्त कहानी की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में उसे फिर से साहित्य की ओर लौटने की दरकार है।

मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, धर्मवीर भारती और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की रचनाएं भी फिल्मकारों को प्रेरित करती थीं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों का प्रभाव भी हिंदी सिनेमा के गंभीर रचनाकारों पर दिखाई देता था।

**पटकथा लेखन के स्टार सलीम-जावेदः** 1970 के दशक में पटकथा लेखन को नई ऊंचाई सलीम-जावेद की जोड़ी ने दी। 'जंजीर', 'दीवार', 'शोले', 'त्रिशूल', 'डॉन' और 'शक्ति' जैसी फिल्मों ने साबित किया कि मजबूत कहानी और दमदार संवाद किसी भी फिल्म की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यह संयोग नहीं है कि इन फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं।

**बदलने लगीं प्राथमिकताएंः** 1980 के दशक में हिंदी सिनेमा की दिशा बदलने लगी। वीडियो कैसेट संस्कृति, टेलीविजन का विस्तार और तेजी से बढ़ते व्यावसायिक दबावों के बीच कहानी की जगह फॉर्मूले ने लेनी शुरू कर दी। 'डिस्को डांसर' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता ने निर्माताओं को यह विश्वास दिलाया कि संगीत, सितारे और मनोरंजक मसाले, सशक्त कहानी की कमी पूरी कर सकते हैं।

**नहीं है कहानियों की कोई कमीः** वास्तव में बॉलीवुड की समस्या प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि साहित्य और समाज से दूरी है। हिंदी पट्टी में प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, संजीव और नीलोत्पल मृणाल जैसे लेखकों का विशाल संसार मौजूद है। लोककथाओं, इतिहास, ग्रामीण भारत, छोटे शहरों, सामाजिक बदलावों और समकालीन भारत के असंख्य अनुभवों से भरी कहानियां आज भी लिखी जा रही हैं। जरूरत केवल उन्हें पर्दे पर लाने की इच्छा की है।

**फिर से देना होगा कहानियों को महत्वः** यदि बॉलीवुड को अपनी खोई हुई रचनात्मक ऊर्जा वापस हासिल करनी है तो उसे फिर से लेखकों की महत्ता को स्वीकारना होगा। आखिरकार 'मदर इंडिया', 'दो बीघा जमीन', 'गाइड', 'आनंद' जैसी फिल्मों को कैमरों ने नहीं, कहानियों ने अमर बनाया था। सिनेमा का भविष्य भी वहीं से निकलेगा जहां उसका स्वर्णिम अतीत जन्मा था यानी लेखकों की मेज से। *

(लेखक फिल्म नीति के जानकार हैं)

## दक्षिण भारतीय फिल्मों में बरकरार कहानी का महत्व

दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योगों ने कहानी की परंपरा को बनाए रखा। मलयालम सिनेमा में एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, लोहितदास और हाल के वर्षों में दिलीश पोथन तथा श्याम पुष्करण जैसे लेखकों-निर्देशकों ने साहित्य और समाज से जुड़ी कहानियों को जीवित रखा। तमिल सिनेमा में जयकांतन, सुजाता और बाद में वेट्रिमारन जैसे फिल्मकारों ने यथार्थवादी कथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी का परिणाम है कि 'दृश्यम', 'प्रेमम', 'कुंबलंगी नाइट्स', 'महाराजा', 'असुरन', 'जय भीम', '96', 'कांतारा', 'चार्ली 777' और 'पुष्पा' जैसी फिल्में अपनी स्थानीय संस्कृति में रची-बसी होने के बावजूद राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचती हैं। ये फिल्में दर्शाती हैं कि स्थानीयता ही वैश्विकता का रास्ता बन सकती है